लियोनार्डो दा विंची

कौन थे?

रोबर्टा एडवर्ड्स

चित्र: ड्रू केली

लियोनार्डो दा विंची

कौन थे?

लियोनार्डो दा विंची कौन थे?

रोबर्टा एडवर्ड्स

चित्र: ट्रू केली

विषयवस्तु

लियोनार्डो दा विंची कौन थे?

कुछ लोग अत्यधिक प्रतिभाशाली होते हैं. . . जैसे लियोनार्डो दा विंची! वो उस काल में पैदा हुए जब उनके चारों तरफ बहुत से बेहद प्रतिभाशाली लोग थे. फिर भी, वो उन सब से अधिक प्रखर थे.

वो किसी से भी चित्रकार से बेहतर चित्र बना सकते थे. उनकी एक पेंटिंग, मोना लिसा, दुनिया की सबसे प्रसिद्ध पेंटिंग है. वो एक वैज्ञानिक थे. वो प्राकृतिक दुनिया के रहस्यों को उजागर करने की कोशिश करते थे. वो एक इंजीनियर और आविष्कारक भी थे. उन्होंने पहली साइकिल के असलियत में बनने से, तीन सौ साल पहले एक ऐसी साइकिल डिजाइन की थी जो वाकई में काम करती थी.
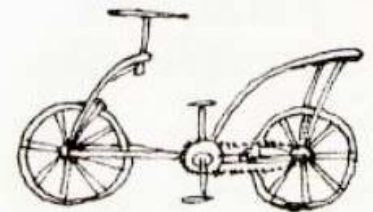
लियोनार्डो की लॉयर दा ब्रेसिया

वो एक बेहतरीन एथलीट भी थे. एक उम्दा संगीतकार के साथ-साथ वो बहुत सुन्दर भी थे. (हालांकि उनकी कोई ज्ञात पेंटिंग नहीं है, लेकिन जब भी उस समय के लोगों ने उनका वर्णन किया, उन्होंने हमेशा उनके अच्छे रंगरूप का उल्लेख किया.)

"मैं चमत्कार करना चाहता हूं," उन्होंने कहा. फिर भी उन्हें कई बार असफलता का सामना करना पड़ा. जबकि वो काफी मज़ेदार बातें करते थे, फिर भी वो सभी पर अविश्वास करते थे. वो ज़िंदगी भर कुंवारे रहे. उनका अपना कोई परिवार नहीं था. सोलह साल तक उनका अपना कोई घर भी नहीं था.

लियोनार्डो अपने स्वयं के मानकों से निराश थे. वो अपने खुद के लिए निर्धारित लक्ष्यों तक कभी नहीं पहुंच पाए. उनके महानतम कार्य अधूरे रह गए. फिर भी, उन्होंने 67 वर्षों में जो कुछ हासिल किया वो अभी भी मानव उत्कृष्टता के लिए मानक निर्धारित करता है. किसी अन्य इंसान के उनसे बेहतर काम करने की कल्पना करना कठिन है.

अध्याय 1

एक अवांछित लड़का

15 अप्रैल, 1452 को इटली के एक छोटे से पहाड़ी शहर में एक बच्चे का जन्म हुआ. उसके पिता एक अच्छे व्यवसायी - सेर पिएरो थे. उसकी मां कैटरिना एक गरीब युवा किसान लड़की थीं. हम उनका अंतिम नाम भी नहीं जानते हैं. उनके बच्चे का नाम लियोनार्डो रखा गया. क्योंकि वो जिस शहर से आया था उसे विंची कहा जाता था, इसलिए उसे लियोनार्डो दा विंची के नाम से जाना जाने लगा - यानी विंची का लियोनार्डो.

इटली
ITALY
विंची Vinci
Florence फ्लोरेंस
Rome रोम

लियोनार्डो के माता-पिता ने शादी नहीं की थी. क्योंकि पिता को अपने अवैध बच्चे पर शर्म आई इसलिए उन्होंने उसे उसकी माँ के पास ही छोड़ दिया. सेर पिएरो ने दूसरी महिला से शादी की, जो अधिक सम्मानित घर से थीं, और एक नया परिवार शुरू किया. सेर पिएरो पास के व्यस्त शहर फ्लोरेंस में रहने चले गए. कैटरिना भी बच्चे को अपने साथ नहीं रखना चाहती थीं. उन्होंने केवल एक-दो साल तक लियोनार्डो की देखभाल की. फिर उन्होंने भी किसी और से शादी कर ली और एक नया परिवार शुरू किया.

फिर, छोटे लियोनार्डो का क्या हुआ?

सेर पिएरो चाहते थे कि लियोनार्डो उनके माता-पिता के पास रहे. लेकिन लियोनार्डो के दादा-दादी काफी बूढ़े थे - उस समय उनके दादा पचहत्तर साल के थे. उस उम्र में, वे एक छोटे बच्चे के साथ भला क्या करते? फिर भी उन्होंने लियोनार्डो को रखा. उन्होंने उसे खिलाया, पहनाया, और उसे एक घर दिया. लेकिन वो उससे अधिक कुछ नहीं कर पाए. लेकिन उस छोटे लड़के को किसी ने भी प्यार नहीं दिया.

एकमात्र व्यक्ति जिसने लियोनार्डो में दिलचस्पी दिखाई, वो फ्रांसेस्को नाम के एक चाचा थे.

फ्रांसेस्को एक किसान थे और उन्हें विंची के आसपास के खूबसूरत ग्रामीण इलाकों से बेहद प्यार था. वो जैतून के पेड़ों से ढकी पहाड़ियों में लंबी सैर करते थे.

लियोनार्डो भी उनके साथ जाता था. उन रास्तों पर चलते-चलते ही लियोनार्डो को प्राकृतिक दुनिया से प्यार हुआ. पहाड़ियों की लुढ़कती आकृतियाँ, जैतून के पेड़ों के चांदी जैसे पत्ते, पक्षियों की उड़ान, और कोमल धुँधली धूप.

लियोनार्डो जहां भी जाते, वो अपने साथ एक छोटी सी नोटबुक लेकर जाते. जिस चीज में उनकी रुचि होती, वो उसका चित्र बनाते थे. कोई पौधा, नाले में बत्तखें, फूल, कोई कीड़ा या कुछ गायें.

उस समय कागज बहुत महंगा था, लेकिन लियोनार्डो भाग्यशाली थे. उनके पिता के धंधे की वजह से कागज़ की सप्लाई हमेशा बनी रहती थी. कागज़ उन सबसे महत्वपूर्ण चीजों में से एक थी, जो सेर पिएरो ने अपने बेटे को दी.
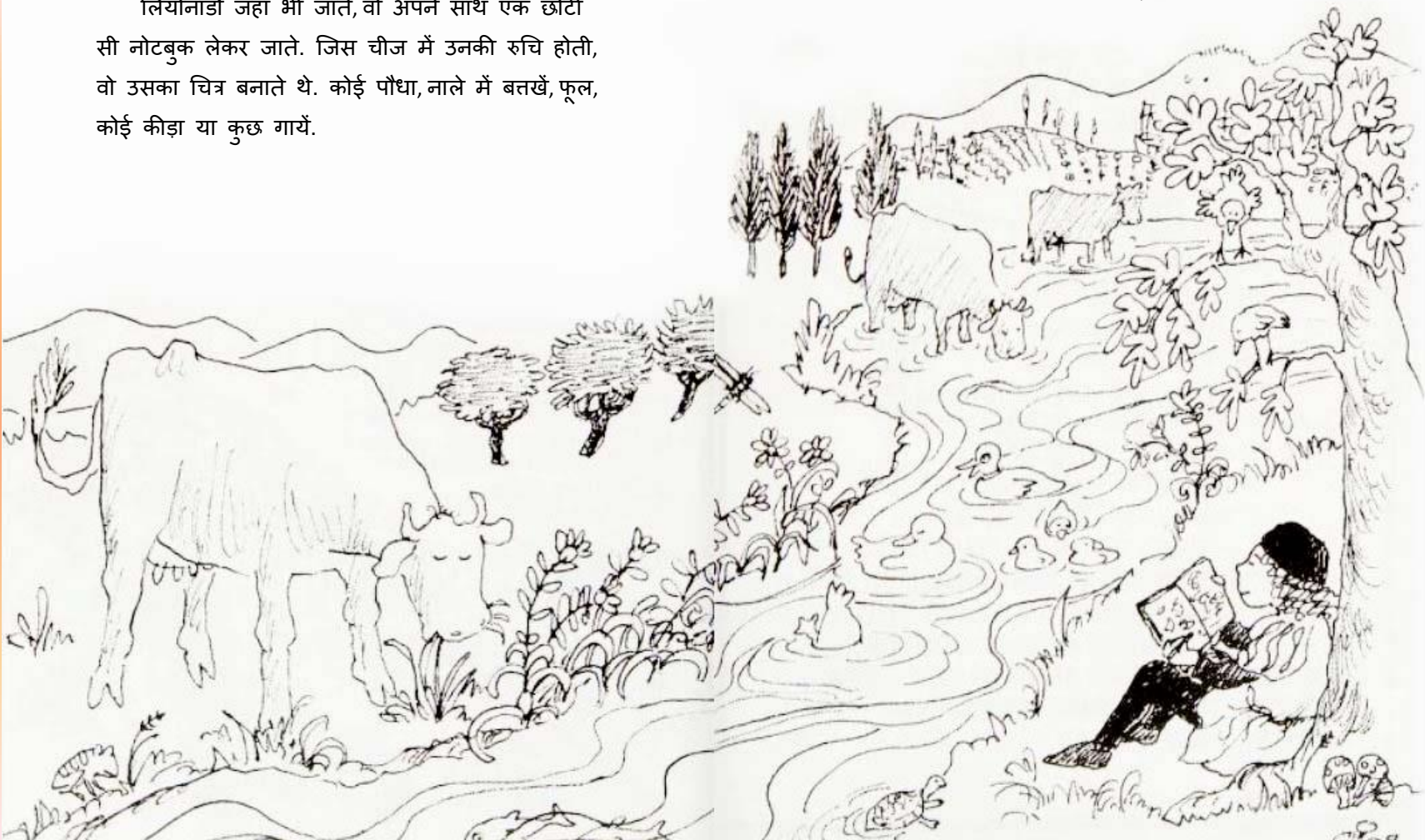
चर्मपत्र और कागज

चर्मपत्र भेड़, बछड़े या बकरियों जैसे जानवरों की खाल से बनाया जाता था. जानवरों की त्वचा को तब तक सुखाया और उपचारित किया जाता था जब तक कि वो सपाट और कागज़ की तरह न हो जाए.

लगभग दो हजार साल पहले शहतूत के पेड़ की छाल का इस्तेमाल कर चीन में पहली बार कागज बनाया गया था. (आज सबसे अच्छा पेपर पुराने कपड़ों से बनता है.)

चर्मपत्र कागज से ज्यादा मजबूत होता था. वो अधिक महंगा भी होता था. मध्य युग में हाथ से नक़ल की गई सुंदर प्रार्थना पुस्तकें और बाइबिल, चर्मपत्र पर लिखी गई थीं. अब चर्मपत्र शायद ही कहीं इस्तेमाल किया जाता हो.

कागज की सामग्री को गीला करके तब तक कूटा जाता है जब तक उसके रेशे अलग-अलग न हो जाएं.

जब रेशे टूटकर एक तरल जैसे पदार्थ में बदल जाते हैं तब उन्हें एक जाली के सांचे में डाला जाता है. साँचे में से पदार्थ के निकलने के बाद, उसे कागज़ की शीट के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है. यूरोप में, कागज़ को उत्तरी अफ्रीका के मूरों द्वारा लाया गया था. पहली पेपरमेकिंग मिल, स्पेन में लगभग 1150 में बनाई गई थी.

लियोनार्डो जब छोटे थे तो भी उनमें चित्र बनाने की अद्भुत प्रतिभा थी. चित्र उनकी उँगलियों से निकलकर कागज़ पर लगभग बहने लगते थे. उनके बनाए खरगोश और पक्षी स्थिर चित्र जैसे नहीं लगते थे. वे जीवित लगते थे.

लियोनार्डो प्रकृति की सुंदरता को समझते थे. वो प्रकृति के खतरों को भी जानते थे. जब वो केवल चार साल के थे, तो उनके ग्रामीण इलाके में एक भयानक तूफान आया. खेत नष्ट हो गए, और कई लोग मारे गए. फिर जब वो दस वर्ष के थे, तो अर्नो नदी से फ्लोरेंस में बाढ़ आ गई. लियोनार्डो ने तूफान को और बाढ़ को देखा. फिर वो उसे कभी नहीं भूले. अपने पूरे जीवन भर, उन्होंने बहते पानी के चित्र बनाए.

पानी, जानवरों और पौधों के लिए जीवन का स्रोत था. लेकिन वो विनाश का भी एक स्रोत भी था. लियोनार्डो उस बल के दोनों पक्षों को समझना चाहते थे और उसकी शक्ति को नियंत्रित करना चाहते थे.

Flooded Florence

फ्लोरेंस में बाढ़
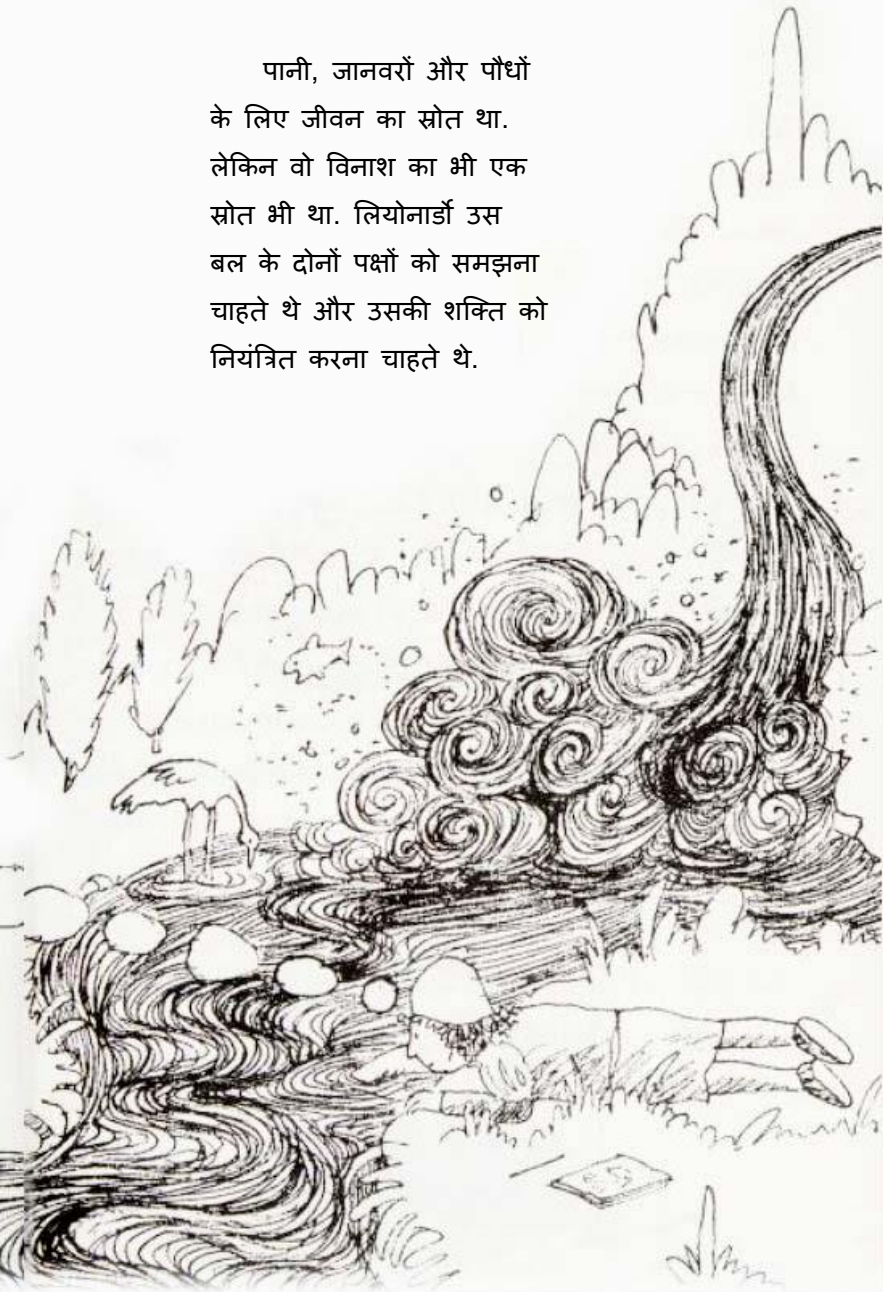
लियोनार्डो के पिता को अपने बेटे के ड्राइंग के हुनर के बारे में निश्चित रूप से पता था. लियोनार्डो के किसी भी स्केच पर एक नज़र डालने से वो पता चल जाता. सेर पिएरो एक व्यावहारिक व्यक्ति थे. उन्हें पता था कि लियोनार्डो के जीवन में विकल्प सीमित थे. क्योंकि सेर पिएरो ने कैटरिना से कभी शादी नहीं की थी, इसलिए लियोनार्डो किसी विश्वविद्यालय में नहीं पढ़ सकते थे. वे अपने पिता की तरह वकील और बिजनेसमैन भी नहीं बन सकते थे. वो डॉक्टर भी नहीं बन सकते थे. लेकिन वो फ्लोरेंस के किसी आर्ट स्टूडियो में ज़रूर काम कर सकते थे. वैसे भी कलाकार होना एक सम्मानजनक व्यवसाय था. इसलिए सेर पिएरो ने लियोनार्डो को शहर ले जाने का फैसला किया. वहां, उन्होंने लियोनार्डो के लिए एक प्रसिद्ध कलाकार के साथ रहने और काम सीखने की व्यवस्था की. उस कलाकार का नाम एंड्रिया डेल वेरोकियो था. वो निश्चित रूप से सबसे अच्छी बात थी जो सेर पिएरो ने अपने बेटे के लिए की. उसने लियोनार्डो के जीवन को हमेशा के लिए बदल दिया.

वेरोकियो

अध्याय दो

द आर्ट स्टूडियो

1400 के दशक के दौरान, फ्लोरेंस पूरी दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण और सबसे रोमांचक शहर था. इटली के पांच शहर-राज्यों में से, फ्लोरेंस एक था. शहर-राज्य होने का मतलब था कि फ्लोरेंस की खुद अपनी सरकार थी. उसे सिग्नोरिया कहा जाता था. लेकिन कई सालों तक फ्लोरेंस पर वास्तव में एक बहुत अमीर और शक्तिशाली परिवार का शासन था जिन्हें मेडिसी कहा जाता था.

मेडिसी परिवार कला प्रेमी थे. उन्होंने फ्लोरेंस में खूबसूरत घर,चर्च और पुस्तकालय बनवाए. वे चाहते थे कि कला और कलाकृतियां उन सभी भवनों के अंदर समाएँ. एंड्रिया डेल वेरोकियो उस समय फ्लोरेंस में काम करने वाले सबसे प्रसिद्ध कलाकारों में से एक थे. उनके पास काफी काम था. लियोनार्डो बहुत भाग्यशाली थे कि उन्हें ऐसे गुरु के अधीन अध्ययन करने का मौका मिला.

लियोनार्डो एक जमूरे यानि अपरेंटिस थे. वेरोकियो के स्टूडियो में दाखिल होने के समय वे बारह वर्ष के थे. सभी प्रशिक्षु लड़के थे. लड़कियों को उसकी अनुमति नहीं थी. प्रशिक्षुओं को कोई स्टाईपेंड या वज़ीफ़ा नहीं मिलता था. लेकिन उन्हें मुफ्त में कमरा और खाना और थोड़े पैसे मिलते थे. स्टूडियो में वे कलाकार बनना सीखते थे.

पहले वर्ष में उनके लिए ड्राइंग की कक्षाएं होती थीं. लगभग सात या आठ वर्षों के बाद ही वे चित्रों को रंगना, भित्ति चित्र (दीवारों पर सीधे किए गए चित्र), संगमरमर या कांसे की मूर्तियाँ बनाना, मिट्टी के बर्तन, चाँदी के बर्तन, सोने की कलाकृतियां और यहाँ तक कि इमारतों का डिज़ाइन बनाना सीखते थे.

जमूरे अपना काम नीचे से शुरू करते और फिर ऊपर की ओर बढ़ते थे. शुरू में वो स्टूडियो में झाड़ू लगाते थे, पुराने कलाकारों के लिए छोटे-मोटे काम करते थे और दिन के अंत में स्टूडियो की सफाई करते थे. क्योंकि तब कला सामग्री की कोई दुकान नहीं थी इसलिए लियोनार्डो और अन्य प्रशिक्षुओं को तूलिका (पेन्ट-ब्रश) और पेंट बनाना भी सीखना होता था.

ब्रश के लिए, विभिन्न जानवरों के बाल, लकड़ी के हत्थे में फंसाए जाते थे. उदाहरण के लिए, सूअर के बालों से अच्छे, सख्त ब्रश बनते थे. नरम ब्रश के लिए गिलहरी के फर का इस्तेमाल किया जाता था..

कलाकार एक प्रकार के रंग से रंगा करते थे जिसे "टेम्परा" कहा जाता था. उसका आधार अंडा था, तेल नहीं (ऑइल-पेंट से पेंटिंग सबसे पहले नीदरलैंड में शुरू हुई; इटली में, कलाकारों ने 1470 के दशक तक ऑइल-पेंट का इस्तेमाल शुरू नहीं किया था.) लियोनार्डो ने रंग बनाना सिखा. नीला रंग, लैपिस लाजुली नामक पत्थर को पीसने से मिलता था. छोटे कीड़ों को कुचलने से लाल रंग मिलता था. पीला रंग, एक प्रकार के बेर के रस से मिलता था.

उस समय पेंटिंग्स के लिए कैनवस का इस्तेमाल नहीं होता था. उसके बजाए कलाकार लकड़ी के चपटे पैनल पर पेंट करते थे. लेकिन उसके लिए पहले लकड़ी की तख्ती तैयार करनी होती थी. उबालने से वो बाद में फूटने या टूटने से बचती थी.
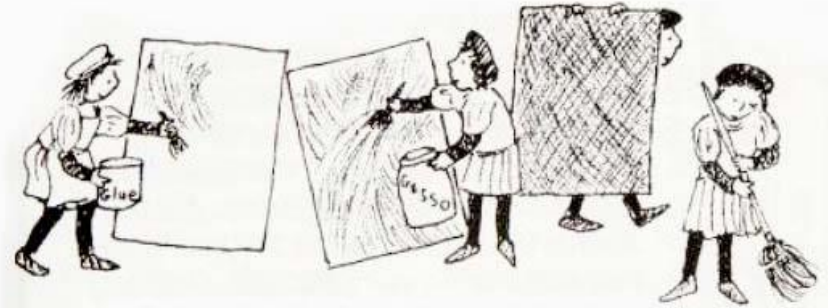
फिर उसके ऊपर ब्रश से गोंद लगाया जाता था. उसके बाद उसके ऊपर "गेसो" नाम के एक महीन प्लास्टर का एक कोट लगाई जाती थी. उससे पेंटिंग के लिए एक अच्छी, चिकनी सतह वाला पैनल बनता था. ये सभी काम प्रशिक्षु यानी जमूरे करते थे. वेरोकियो का स्टूडियो हमेशा व्यस्त रहता था.
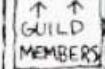
सीढ़ी पर ऊपर चढ़ना

वेरोकियो का स्टूडियो अपने समय में बड़ा ख़ास था. प्रशिक्षु (जमूरे) सीढ़ी के बिल्कुल नीचे स्तर पर थे. उनके ऊपर "जर्नीमैन" कहलाने वाले मजदूर थे. उनके पास कई वर्षों का अनुभव था और वे जमूरों को ट्रेनिंग देने में मदद करते थे. वे काबिल थे लेकिन अभी इतने अच्छे नहीं थे कि वे चित्रकारों की मंडली में शामिल हो सकें. गिल्ड एक ऐसा समूह था जो अपने सदस्यों के हितों की रक्षा करता था. कई अलग-अलग व्यवसायों के अपने गिल्ड थे, जैसे कि चमड़ा श्रमिक, ड्रगिस्ट, और बुनकर. वेरोकियो के सर्वश्रेष्ठ सहायक पहले ही कलाकारों की मंडली के सदस्य बन गए थे और इसलिए उन्हें अब मास्टर के रूप में जाना जाता था. स्टूडियो की चोटी पर खुद वेरोकियो थे : उस्तादों के उस्ताद.

पेंटिंग्स के विषय

लियोनार्डो के समय में, कला के कद्रदान या संरक्षक दो प्रकार के चित्रों के आर्डर देते थे. वे या तो स्वयं, या अपने परिवार के सदस्यों के चित्र बनवाते थे, या फिर वे धार्मिक चित्र चाहते थे, जो यीशु और संतों के जीवन के क्षणों को दिखाते हों. वो कोई लैंडस्केप पेंटिंग नहीं चाहते थे जहां प्राकृतिक दृश्य - कोई पर्वत श्रृंखला या एक झील का दृश्य - विषय हो. न ही वो स्थिर जीवन के चित्र चाहते थे, जैसे फलों की टोकरी, फूलदान में फूलों का गुच्छा, या रात के खाने के लिए टेबल सेट जैसी वस्तुओं के चित्र आदि. अक्सर इस तरह की चीजें धार्मिक चित्रों में दिखाई देती थीं, लेकिन वे मुख्य फोकस नहीं थीं. 1520 में अल्ब्रेक्ट अल्डोर्फर नाम के एक जर्मन कलाकार लैंडस्केप पेंटिंग करने वाले पहले व्यक्ति थे. स्थिर-जीवन के चित्रों को सबसे पहले नीदरलैंड में 1650 के दशक में बनाया गया था.

किसी एक समय पर उस्ताद और उसके सहायक कई अलग-अलग प्रोजेक्ट्स पर काम कर रहे होते थे.

ग्राहक जो कुछ ऑर्डर भेजते थे वेरोकियो उसे बनाते थे. स्टूडियो के प्रमुख के रूप में, वेरोकियो अपना व्यापार चलाते थे और अनुबंधों को पूरा करते थे. अनुबंध में सटीक रूप से काम का उल्लेख होता था (उदाहरण के लिए, घोड़े की पीठ पर एक सैनिक की मूर्ति), उसे पूरा करने में कितना समय लगेगा, उसकी लागत कितनी होगी, और उसमें किस-किस सामग्री का उपयोग किया जाएगा. (संगमरमर, लकड़ी की तुलना में अधिक महंगा था. पैंटिंग पर "सोने की पत्ती" कहे जाने वाले सोने के वेफर की लागत उसमें जोड़ी जाती थी.) उस्ताद वेरोकियो केवल कलाकृति पर अपने हस्ताक्षर करते थे.

तुरंत ही वेरोकियो ने देखा कि युवा लियोनार्डो में एक विशेष प्रतिभा थी. वो एक स्वाभाविक चित्रकार थे. इसलिए जैसे ही लियोनार्डो ने धंधे की कुछ मूल बातें सीख लीं, वैसे ही लियोनार्डो को और अधिक महत्वपूर्ण कार्य करने को मिलने लगे.

ग्राहक या संरक्षक, अक्सर फ्लोरेंस के महत्वपूर्ण चर्चों में से किसी को, एक धार्मिक पैंटिंग भेंट करते थे. वो पैंटिंग मैरी और बच्चे यीशु के साथ जोसेफ और तीन बुद्धिमान राजाओं और चरवाहों की हो सकती थी. कभी-कभी संरक्षक अपनी पत्नी और खुद को भी चित्र में शामिल करवाते थे. वे चित्र में घुटने टेककर प्रार्थना करते हुए दिखाई दे सकते थे. चित्र में उनका आकार संतों की तुलना में हमेशा छोटा होता था.

रविवार को, जब लोग सब लोग चर्च में आते, तो वे मैरी और यीशु की सुंदर पेंटिंग और उसकी कीमत चुकाने वाले संरक्षक को देख सकते थे. वो चर्च के लिए एक प्यारा उपहार होता था. इससे यह भी पता चलता था कि संरक्षक कितना समृद्ध और महत्वपूर्ण था.

वेरोकियो को यीशु के बपतिस्मा की पेंटिंग बनाने का काम मिला. इसमें यीशु एक पथरीली धारा में खड़े थे और संत जॉन उनके सिर पर पानी डाल रहे थे. पेंटिंग में बाईं ओर दो देवदूत थे. वेरोकियो ने एक देवदूत को छोड़कर लगभग बाकी सभी चीजों को खुद चित्रित किया था. देवदूत यीशु को जिस तरह से घूर रहा था उससे यह पता चलता था कि वो जो कुछ देख रहा था वो उसके महत्व को वो समझता था. उसका चेहरा मधुर और बुद्धिमान था. लियोनार्डो ने देवदूत को चित्रित किया, और वो इतना सजीव दिखा कि पेंटिंग में बाकी सब कुछ उसकी तुलना में फीका लगा. वेरोकियो ने महसूस किया कि लियोनार्डो वकाई में प्रतिभाशाली था. लियोनार्डो के पास ऐसी गज़ब की प्रतिभा थी जो वेरोकियो ने पहले कभी नहीं देखी थी. उस्ताद वेरोकियो समझ गए कि उनका जमूरा उनसे कहीं ज़्यादा काबिल था.

एक कहानी के अनुसार लियोनार्डो के देवदूत को देखने के बाद, वेरोकियो ने फिर कभी अपनी तूलिका नहीं उठाई. उसने सोने की अन्य मूर्तियाँ और वस्तुएँ बनाईं. लेकिन उसके बाद वेरोकियो ने कभी दूसरी पेंटिंग नहीं की.

वेरोकियो द्वारा डेविड की मूर्ति (1473)

अध्याय 3

बड़ी दुनिया

लियोनार्डो, वेरोकियो की कार्यशाला में लंबे समय - तेरह साल तक रहे. लियोनार्डो खुद एक मास्टर और गिल्ड के सदस्य बन गए. लेकिन उन्होंने अपना कोई स्टूडियो शुरू नहीं किया. शायद वेरोकियो का स्टूडियो लियोनार्डो को एक घर जैसा लगता था. वो एक ऐसी जगह थी जहाँ उन्हें बहुत अच्छा लगता था. वेरोकियो एक दयालु उस्ताद थे, और दोनों गुरु और चेला, शायद आपस में काफी करीब थे.

फ्लोरेंस भी रहने के लिए एक रोमांचक जगह थी. वो शहर नए विचारों से भरा था. वो किताबों का शहर भी था. बहुत सारी किताबें. 1400 के दशक के मध्य तक, कोई भी छपी पुस्तकें नहीं थीं. हर किताब की नकल हाथ से की जाती थी. कभी-कभी पृष्ठों पर सुंदर चित्र उकेरे जाते थे. वो अपने आप में कला का एक उम्दा काम था. लेकिन वैसी एक किताब बनाने में भी काफी समय लगता था.

जोहान्स गुटेनबर्ग

फिर, 1450 के आसपास, जर्मनी में जोहान्स गुटेनबर्ग नाम के एक व्यक्ति ने एक नई खोज की. उन्होंने एक प्रिंटिंग प्रेस बनाया. इसमें स्टील के टुकड़ों से बने अक्षरों (टाइप) का इस्तेमाल किया गया था. अलग-अलग शब्द बनाने के लिए उन्हें इधर-उधर रखा जा सकता था. स्याही लगाने के बाद कई कागजों को बारी-बारी मुद्रित किया जा सकता था. तब बाइबिल को दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण किताब माना जाता था. इसलिए जो सबसे पहली किताब छपी वो बाइबल ही थी.
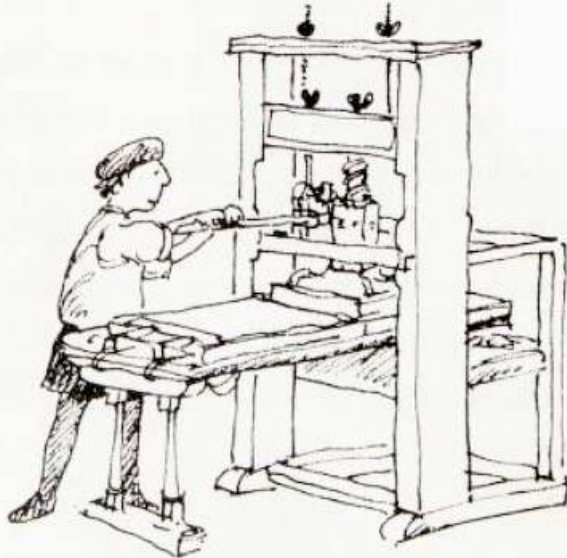
हालाँकि, बहुत जल्दी ही अन्य पुस्तकें भी छपने लगीं. गणित पर किताबें. नक्शों की किताबें. प्लेटो और अरस्तू जैसे अतीत के महान विचारकों की पुस्तकें. फिर अधिक पुस्तकें उपलब्ध होने से, ज़्यादा लोगों ने पढ़ना सीखना शुरू किया.

एक बच्चे के रूप में, लियोनार्डो ने पढ़ना-लिखना सीखा था. वो साधारण गणित भी जानते थे. लेकिन उनके लिए इतना काफी नहीं था. वो हर चीज के बारे में और सीखना चाहते थे. वो किसी विश्वविद्यालय में नहीं पढ़ सके, लेकिन वो खुद अपने आपको जरूर पढ़ा सकते थे. इसलिए उन्होंने किताबें खरीदना और उन्हें जमा करना शुरू किया. वो जीवन भर यही करते रहे.

पेंटिंग को त्रि-आयामी, या 3-डी बनाने के लिए कलाकारों को गणित की आवश्यकता पड़ती थी. इसीलिये मध्य युग में, चित्र यथार्थवादी नहीं दिखते थे. उन चित्रों में लोग ताश के पत्तों पर राजा या रानी की तरह सपाट दिखते थे. इमारतें भी सपाट दिखती थीं, जैसे वे किसी नाटक में दृश्यों के टुकड़े हों.

मैडोना एंड चाइल्ड, ड्यूक्सियो द्वारा एक मध्य-युगीन पेंटिंग

लेकिन 1400 के दशक में फिलिप्पो ब्रुनेलेस्ची नाम के एक कलाकार ने चित्रों में गहराई दिखाने का एक तरीका खोज निकाला. उनकी पेंटिंग को देखने वाला व्यक्ति यह सोच कर धोखा खा जाता था कि वो वास्तविक स्पेस में कुछ देख रहा हो.
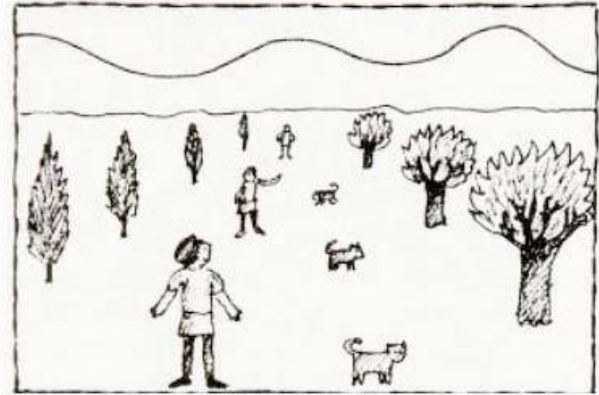
उदाहरण के लिए, क्लोज़-अप के चित्र को उन चित्रों की तुलना में बहुत बड़ा होना चाहिए जो दूर हों. इसे परिप्रेक्ष्य (पर्सपेक्टिव) पेंटिंग कहा जाता है. किसी चित्रकार को लकड़ी के पटल पर आकृतियों का सही स्थान का पता लगाने के लिए गणित की आवश्यकता होती थी.

परिप्रेक्ष्य (पर्सपेक्टिव)

पुनर्जन्म

फ्रेंच शब्द रेनेसांस का अर्थ होता है पुनर्जन्म. वो इतिहास के सबसे रोमांचक कालखंडों में से एक था. सटीक तिथियां देना कठिन है, लेकिन पुनर्जागरण 1400 के प्रारंभ या मध्य से लेकर 1600 तक चला.
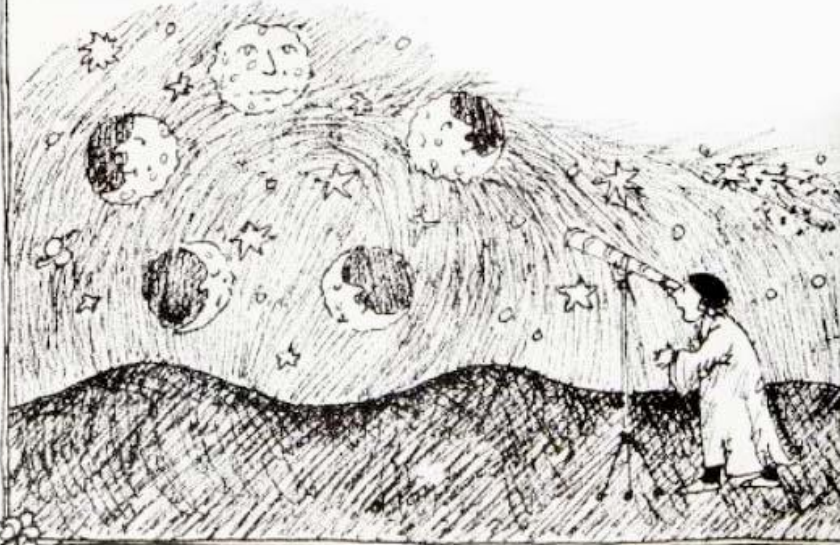
पुनर्जागरण शब्द फ्रेंच था, लेकिन पुनर्जागरण का गढ़ इटली था. वो रचनात्मकता, नए विचारों और सोचने के नए तरीकों का समय था. जीवन का उद्देश्य केवल मर कर, स्वर्ग जाना नहीं था. कई ऐसी महान चीज़ें थीं जिन्हें लोग यहाँ पृथ्वी पर पूरा कर सकते थे. शब्द "पुनर्जागरण आदमी" किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जो हर चीज में अच्छा और निपुण हो; लियोनार्डो उसका का एक उत्कृष्ट उदाहरण थे. कलाकारों ने अब सजीव चित्रों द्वारा मानव शरीर का जश्न मनाया. विद्वानों ने प्राचीन ग्रीक और रोमन विचारकों के कार्यों का अध्ययन किया जो सदियों से खो गए थे. खोजकर्ता दुनिया के अज्ञात हिस्सों में रवाना हुए.

नए महाद्वीपों की खोज की गई. वैज्ञानिक भी ब्रह्मांड के बारे में चौंकाने वाली नई खोजें कर रहे थे. कई मायनों में पुनर्जागरण, आधुनिक काल की शुरुआत था.

लियोनार्डो एक महान चित्रकार थे क्योंकि उन्होंने नियमों का पालन किया था. . . और फिर उन्होंने अपने भी नियम भी बनाए. उनकी उंगलियों में गज़ब जादू था. उन्होंने अपनी एक पेंटिंग की पृष्ठभूमि में पहाड़ियों और घाटियों को कुछ धुंधला कर दिया. बस थोड़ा सा. उससे ऐसा लगने लगा जैसे वे आकाश में विलीन हो गए हों. ठीक उसी तरह से दूर के पहाड़ हमारी आँखों को दिखाई देते हैं. उनमें विस्तृत विवरण या तीक्ष्ण रूपरेखा नहीं होती है.

1478 में, जब लियोनार्डो लगभग छब्बीस वर्ष के थे, उन्होंने एक सम्पूर्ण पेंटिंग पूरी की. वो अननसीएशन "Annunciation" का एक दृश्य था. अननसीएशन तब हुई जब एक स्वर्गदूत मैरी को दिखाई दिया.

स्वर्गदूत ने मैरी को बताया कि उनका यीशु नाम का एक बेटा होने वाला है. लियोनार्डो की पेंटिंग में, मैरी ने वैसे कपड़े पहने हैं जो उस समय की कोई महिला पहनती. मैरी, चारदीवारी वाले एक बगीचे में बैठी हैं. बैकग्राउंड में लैंडस्केप, विंची की पहाड़ियों जैसा दिखता है. चित्र बहुत ही शांतिपूर्ण है, और उसमें नाटक भी है.

अननसीएशन "Annunciation" उनके केवल तेरह चित्रों में से एक है, जो विशेषज्ञों को यकीन है कि लियोनार्डो ने खुद बनाए थे. और उन तेरह में से तीन कभी पूरे नहीं हुए.
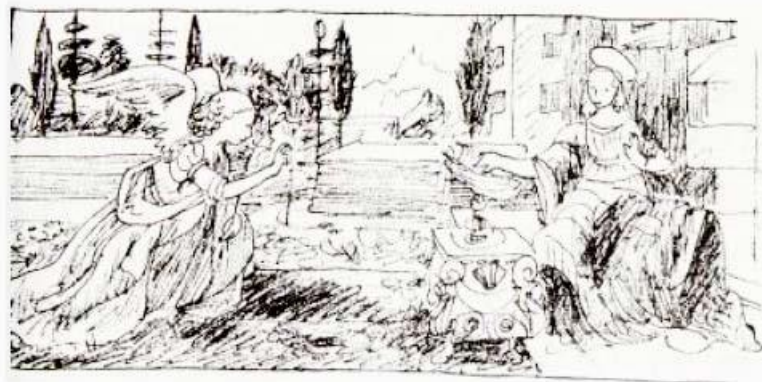
अननसीएशन "Annunciation"

लियोनार्डो ने इतनी कम पेंटिंग क्यों कीं? ऐसा नहीं था कि वो कम उम्र में मरे. वो साठ की उम्र से अधिक जिए. लियोनार्डो आलसी नहीं थे. उन्हें काम करना पसंद था. अननसीएशन "Annunciation" के लिए उन्होंने दर्जनों ड्रॉइंग पहले ही बना डाली थीं. बालों का हर कर्ल सही होना चाहिए था. घास का हर तिनका भी.

शायद लियोनार्डो ने कुछ अन्य पेंटिंग भी पूरी की हों जो शायद खो गई हों. किसी दिन, भविष्य में, लियोनार्डो की पेंटिंग किसी छोटे से चर्च या महल में मिल सकती हैं. वो पूरी दुनिया के लिए एक बड़ा तोहफा होगा.

लेकिन सच्चाई यह है कि लियोनार्डो को एक प्रोजेक्ट से चिपके रहने में परेशानी होती थी. अगर उन्हें किसी पेंटिंग के लिए ऑर्डर मिलता, तो उसके पहले चरणों में उनकी सबसे ज्यादा दिलचस्पी होती थी. उन्हें यह पता लगाना पसंद था कि पैनल पर चित्रों को कैसे समूहित किया जाएगा. उस चरण में बड़ी चुनौती थी—जैसे किसी पहेली के सभी टुकड़ों को एक साथ जोड़ने का काम. लेकिन पेंटिंग खत्म करना, और उसमें रंग भरना इतना रोमांचक नहीं था. इसलिए कई बार लियोनार्डो अपना काम बीच में ही छोड़ देते थे. उसके लिए उनके संरक्षक शोर मचाते थे. और लियोनार्डो को यह बिल्कुल पसंद नहीं था कि उन्हें बताए कि उन्हें काम कैसे करना है. आखिर वो बेहद प्रतिभाशाली थे!

1478 तक, फ्लोरेंस एक शांतिपूर्ण सुखद शहर नहीं रहा जैसा वो कभी था. मेडिसी परिवार और एक अन्य शक्तिशाली परिवार आपस में युद्ध लड़ रहे थे. मेडिसी शासकों को मारने की साजिशें रची जा रही थीं. अब वहां की गलियां खतरनाक बन गईं थीं.

तीस साल की उम्र में, लियोनार्डो ने शहर बदलने का फैसला किया. वो फ्लोरेंस से उत्तर में एक अन्य शहर-राज्य मिलान चले गए. वहां, उन्हें मिलान के शासक के लिए काम किया. उनका नाम लुडोविको स्फोर्ज़ा था और वो एक षडयंत्रकारी ड्यूक थे.

अध्याय 4

आगे बढ़ना

ड्यूक स्फोर्ज़ा

मिलान में एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था. लेकिन मिलान, फ्लोरेंस जैसे प्रसिद्ध कलाकारों का केंद्र नहीं था. लेकिन लुडोविको सफ़ोरज़ा की कला में बहुत रुचि थी. ड्यूक को बड़ी पार्टियां देना पसंद थीं. उन्हें बड़े-बड़े आयोजन करवाना भी पसंद थे. वो यह भी चाहते थे कि कोई उनके लिए नए हथियार डिजाइन करे. (उस समय शहर-राज्य अक्सर एक-दूसरे के साथ लड़ रहे थे.)

इन सभी चीज़ों में लियोनार्डो की दिलचस्पी थी. लियोनार्डो ने ड्यूक को एक पत्र लिखा. उसमें, लियोनार्डो ने वो सबकुछ सूचीबद्ध किया जिसमें वो अच्छे थे. इसमें उन्होंने कुछ डींग भी मारी. लियोनार्डो ने कहा कि वे इमारतों और पुलों, युद्धपोतों और विशाल तोपों को डिजाइन कर सकते थे. किसी को नहीं पता कि लियोनार्डो ने वो पत्र कब भेजा. एक कहानी के अनुसार लियोनार्डो ने ड्यूक को एक उपहार भी दिया था. ड्यूक को संगीत पसंद था. लियोनार्डो भी संगीत के रसिक थे. फिर लियोनार्डो ने एक ल्यूट बनाया. (वो धनुष के साथ एक वायलिन की तरह होता था.) वो चांदी का बना था, और घोड़े की खोपड़ी के आकार का था! उसे उल्टा खेलना पड़ता था. कहानी सच थी या नहीं वो पता नहीं, लेकिन एक बात निश्चित थी: ड्यूक ने अंततः लियोनार्डो को काम पर रख लिया.

फिर लियोनार्डो मिलान चले गए. ड्यूक जो भी चाहते थे, लियोनार्डो वो बना देते थे. उन्होंने ड्यूक के लिए कई वर्षों तक काम किया, जब तक कि ड्यूक को सत्ता छोड़ने से मजबूर नहीं किया गया.
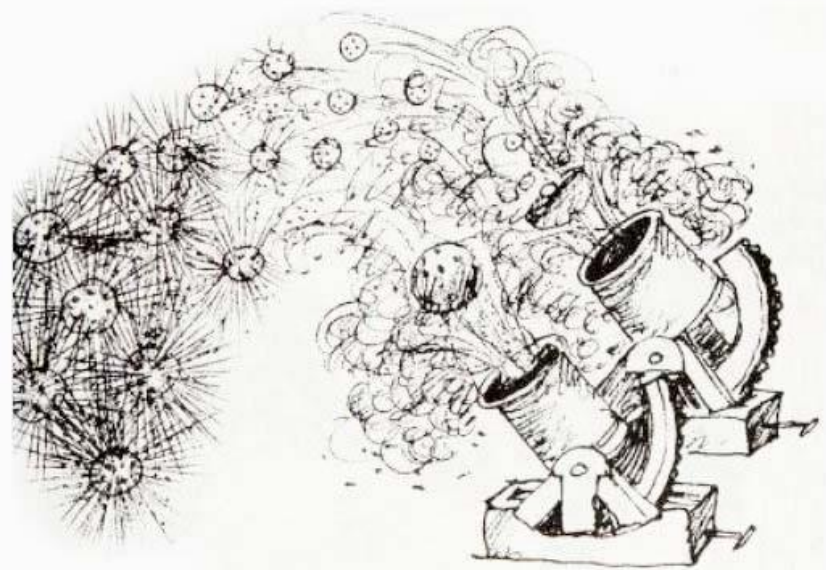
जब ड्यूक के भतीजे की शादी हुई, तो एक बड़ी दावत हुई. दावत की पार्टी के लियोनार्डो प्रभारी थे. उसके लिए उन्होंने एक अविश्वसनीय स्टेज सेट बनाया.

सबने एक नाटक देखा जिसका नाम "द फीस्ट ऑफ पैराडाइज" था. वो कैसा गज़ब का नजारा रहा होगा: एक पहाड़ दो हिस्सों में बंटा था; और उसके अंदर स्वर्ग का एक सुंदर मॉडल था.

फैंसी वेशभूषा में अभिनेताओं ने विभिन्न ग्रहों का प्रतिनिधित्व किया. राशि-चक्र की बारह राशियों को मशालों से जलाया गया. उसके लिए सब लोग गोल-गोल घूमे.

ब्रह्मांड

दूसरी शताब्दी ईस्वी में, एक प्रसिद्ध यूनानी खगोलशास्त्री थे जिनका नाम टॉलोमी था. उनका मानना था कि पृथ्वी ही ब्रह्मांड का केंद्र थी और अन्य ग्रह और सूर्य, पृथ्वी के चारों ओर घूमते थे. 1500 के मध्य तक लोगों ने इस बात को स्वीकार किया. फिर निकोलस कॉपरनिकस नाम के एक पोलिश खगोलशास्त्री ने कहा कि पृथ्वी, ब्रह्मांड का केंद्र नहीं थी. उनके अनुसार सूर्य, पृथ्वी के चारों ओर नहीं घूमता था. उसकी बजाए, पृथ्वी और अन्य सभी ग्रह - सूर्य के चारों ओर घूमते थे. वो सही थे. लेकिन इस तथ्य को लोगों को स्वीकार करने में कई साल लगे.

कॉपरनिकस का ब्रह्मांड
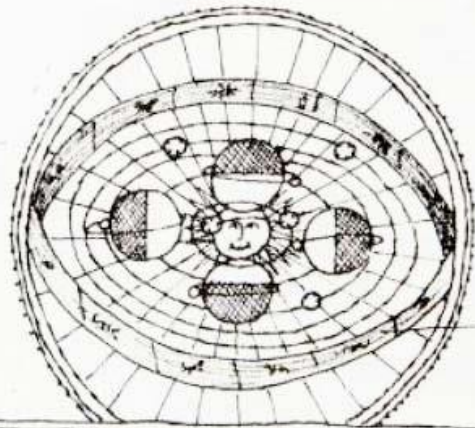
राशि-चक्र के चिन्ह

लियोनार्डो के कुछ कार्य कहीं अधिक व्यावहारिक थे. उन्होंने रानी के स्नान के लिए पानी गर्म करने का एक बेहतर तरीका खोजा. उन्होंने नहरों की एक श्रृंखला भी बनवाई. एक अन्य परियोजना कुछ ऐसी थी जिस पर लियोनार्डो ने वर्षों तक काम किया और फिर भी वो उसे पूरा नहीं कर पाए; अपने जीवन के अंत में वो अभी भी अपने "घोड़े" के बारे में सपना देख रहे थे.

ड्यूक "घोड़े" की एक विशाल मूर्ति चाहते थे. मूर्ति उनके पिता की स्मृति के सम्मान में बननी थी. ड्यूक चाहते कि वो न सिर्फ बड़ी हो - वो चाहते थे कि वो बहुत बड़ी हो. वो अब तक की सबसे बड़ी मूर्ति हो. वर्षों तक, लियोनार्डो ने रेखाचित्र बनाए कि घोड़े की मूर्ति कैसी दिखेगी. उन्होंने ड्यूक के अस्तबल में घोड़ों का अध्ययन किया. उन्होंने मोम के मॉडल बनाए. यहाँ तक कि उन्होंने मरे हुए घोड़ों की माँसपेशियाँ और हड्डियाँ भी काट कर देखीं. वो घोड़ों का गहन अध्ययन करना चाहते थे.
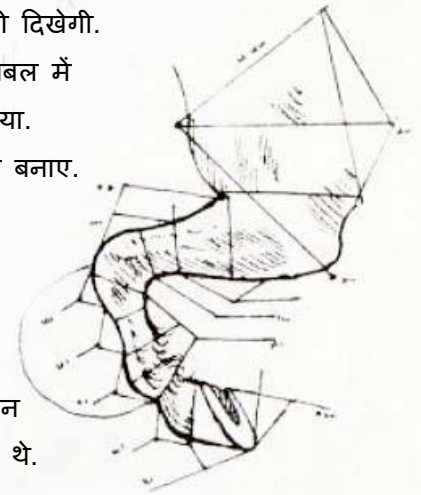
लियोनार्डो के "घोड़े" का आकार असली घोड़े से तीन गुना बड़ा होना था. उसका अगला दाहिना पैर उठा था. वो कांसे का बनता. इतनी बड़ी मूर्ति के लिए अस्सी टन धातु की आवश्यकता थी.

परियोजना पर दस वर्षों काम करने के बाद, लियोनार्डो ने मिट्टी से घोड़े का एक पूर्ण आकार का मॉडल तैयार किया. वो ड्यूक के महल के प्रांगण में खड़ा था. वो चौबीस फुट ऊँचा था. फिर मिलान में हर कोई उस मूर्ति को देखने आता था. और वे सभी इस बात पर सहमत थे: कि उन्होंने वैसा कुछ पहले कभी नहीं देखा था.
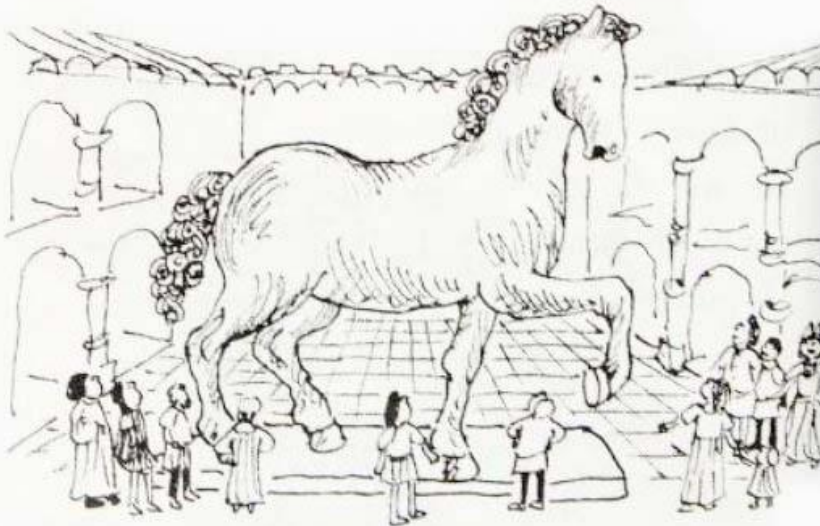
लेकिन लियोनार्डो के पास अभी भी बहुत काम था. उन्होंने मूर्ति के विभिन्न भागों के लिए मिट्टी के सांचे बनाए. उसके बाद, गर्म कांसे को सांचों में डाला गया. वो भी एक बहुत ही पेचीदा प्रक्रिया थी. यदि धातु को पर्याप्त तेजी से नहीं डाला जाता, तो वह कठोर होकर टूट जाती थी. लेकिन लियोनार्डो ने क्रैकिंग से बचने का एक तरीका खोज निकाला.

ड्यूक ने लियोनार्डो की जरूरत के लिए धातु एकत्र की. सच में ऐसा लग रहा था मानो शानदार कांसे की मूर्ति बन जाएगी. लेकिन लियोनार्डो को अपने घोड़े के लिए धातु का इस्तेमाल करने का मौका ही नहीं मिला.

1494 तक, ड्यूक को डर लगने लगा कि फ्रांस के सैनिक उस पर हमला करने वाले थे. फिर उस सारे कांस्य का क्या हुआ? ड्यूक ने उससे तोपें बनवा डालीं. फिर भी, तोपें, फ्रांसीसी सैनिकों को नहीं रोक पाईं. फ्रांस ने 1499 में मिलान पर कब्ज़ा कर लिया.

घोड़े का सिर ढालने के लिए सांचा

और लियोनार्डो के विशाल मिट्टी के घोड़े का क्या हुआ? फ्रांसीसी सैनिकों ने घोड़े का इस्तेमाल निशानेबाज़ी के अभ्यास के लिए किया. उन्होंने घोड़े में तब तक तीर मारे जब तक वह पूरी तरह से नष्ट नहीं हो गया. इतने सालों के काम के बाद घोड़े का कुछ भी नहीं बचा! लियोनार्डो का सपना धूल में मिल गया.

इसमें लियोनार्डो की गलती नहीं थी कि उनका "घोड़ा" कभी खत्म नहीं हुआ. हालाँकि, ड्यूक का एक अन्य महत्वपूर्ण काम का भी दुखद अंत हुआ. और इस बार आंशिक रूप से उसका दोष लियोनार्डो का था.

ड्यूक के महल के पास एक मठ था, एक ऐसा स्थान जहाँ भिक्षु रहते थे और प्रार्थना और अध्ययन करते थे. ड्यूक ने किसी दिन वहीं अपने दफनाए जाने की योजना बनाई. वो चाहते थे कि लियोनार्डो डाइनिंग हॉल की एक दीवार पर एक चित्र बनाएं. इस तरह की पेंटिंग को फ्रेस्को कहा जाता है. एक सुंदर फ्रेस्को बनाना सबसे कठिन प्रकार की पेंटिंग होती है. पानी आधारित पेंट को सीधे ताज़े प्लास्टर पर लगाया जाता है जो अभी सूखा नहीं हो. (इतालवी में, फ्रेस्को का अर्थ होता है "ताज़ा") कलाकार को बहुत जल्दी से काम करना होता है, और एक बार ब्रश से पेंट करने के बाद, कलाकार उसे बदल नहीं सकता है.

मठ में भोजन कक्ष एक बहुत बड़ा कमरा था. वो पचास भिक्षुओं के खाने के लिए काफी बड़ा था. लियोनार्डो ने यीशु के जीवन के अंत से एक दृश्य चुना. उसमें यीशु और उनके बारह अनुयायियों को खाने की मेज पर दिखाया गया था. डाइनिंग हॉल में पेंटिंग के लिए यह एक अच्छा विकल्प था. वो बहुत ही नाटकीय क्षण था. तब यीशु अपने अनुयायियों से कहा था कि उनमें से एक, उनके साथ विश्वासघात करेगा.

लियोनार्डो ने एक मेज पर बैठे हुए तेरह आकृतियों को दिखाने के लिए कई चित्र बनाए. वो मिलान की सड़कों पर घूमते रहते थे और लोगों को अपने फ्रेस्को में पेन्ट करने की तलाश में रहते थे.
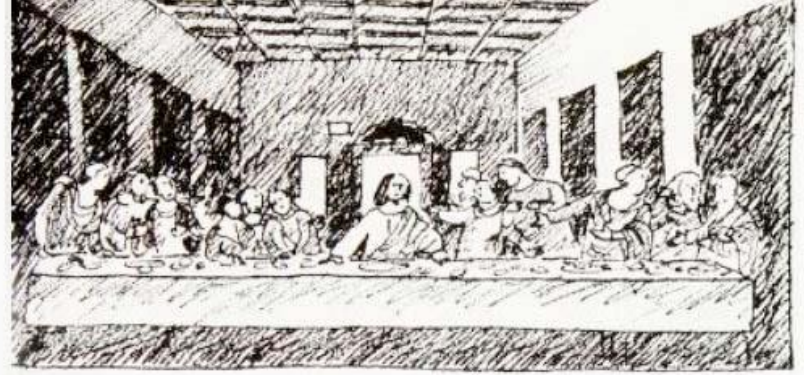
फ्रेस्को को दीवार पर चित्रित किया जाना था ताकि वो भोजन कक्ष का एक हिस्सा लगे. वहां लगभग वैसा ही माहौल होगा जैसे लोग, यीशु और उनके अनुयायी, भिक्षुओं के साथ एक ही कमरे में हों. यहां तक कि पेंटिंग में टेबल और व्यंजन भी उसी तरह के थे जिन्हें भिक्षु इस्तेमाल करते थे.

फ्रेस्को को "द लास्ट सपर" कहा जाता है और यह दुनिया में कला के सबसे प्रसिद्ध कलाकृतियों में से एक है. मिलान के प्रतिष्ठित लोग, लियोनार्डो की पेन्टिंग देखने के लिए मठ की यात्रा करते थे. लियोनार्डो को उससे कोई आपत्ति नहीं थी. वास्तव में, लियोनार्डो को तस्वीर के बारे में लोगों की राय सुनना अच्छा लगता था.

एक सत्रह साल का लड़का भी अक्सर उस कलाकृति को देखने आता था. बड़े होकर वो एक लेखक बना और उसने हमारे लिए "द लास्ट सपर" का एक विवरण छोड़ा है. उसने लिखा कि लियोनार्डो कभी-कभी सुबह-सुबह डाइनिंग हॉल में आते थे. फिर वो सूर्योदय से सूर्यास्त तक पूरे दिन चित्रकारी करते थे. वो बीच में कुछ खाने-पीने के लिए भी नहीं रुकते थे. फिर अगले दिन वो पेंटिंग के सामने खड़े होकर खुद को डांटते थे!

पेंटिंग शायद उतनी अच्छी नहीं थी. और कभी-कभी वो घोड़े की मूर्ति पर काम करने के बाद दौड़े हुए आते थे. वो यहाँ-वहां एक या दो ब्रशस्ट्रोक मारते और फिर चले जाते थे.

फ्रेस्को में, यीशु को केंद्र में दिखाया गया था, और उनके दोनों ओर छह-छह पुरुष थे. यीशु बेहद शांत लेकिन उदास नजर आ रहे थे. अनुयाईयों ने उस खबर पर डरावनी प्रतिक्रिया दी. प्रत्येक पक्ष सदमे की लहर की तरह यीशु से पीछे हटता हुआ प्रतीत होता है. उन लोगों में से एक, हालांकि, बाकी समूह से अलग दिखता है. वो आगे को झुका है, उसका हाथ मेज पर है. उसका नाम जूडस है. और वही यीशु को पकड़वाएगा.
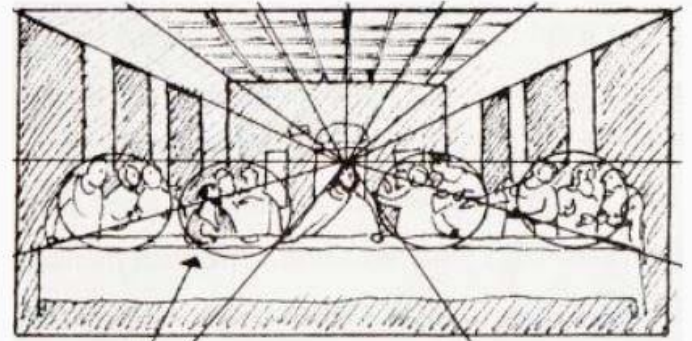
1497 तक "द लास्ट सपर" पूरी हो गई थी. वो पेंटिंग बेहद सजीव और नाटकीय थी. पूरे इटली में लोगों ने इस खूबसूरत, दिल को छू लेने वाली पेंटिंग की चर्चा की. लियोनार्डो अब अपने समय के सबसे महान गुरु के रूप में जाने जाने लगे. "द लास्ट सपर" की प्रतियां अन्य कलाकारों ने भी बनाईं. पूरे यूरोप में लोगों को खरीदने के लिए "इंग्रेविंगस" बनाई गईं. पांच सौ साल बाद भी इस पेंटिंग को एक महान प्रतिभाशाली कलाकृति माना जाता है.

फिर उस पेन्टिंग का एक सुखद अंत क्यों हुआ? वो पेंटिंग के नुकसान की वजह से हुआ. लियोनार्डो द्वारा "द लास्ट सपर" समाप्त करने के पचास साल के अंदर ही पेंटिंग में दरारें पड़ने लगीं और वो छिलना शुरू हो गई. वो सब लियोनार्डो की गलती के कारण हुआ.

लियोनार्डो को भितिचित्रों यानि फ्रेस्कोस पर काम करना पसंद नहीं था. वो बार-बार वापस जाकर पेंटिंग में बदलाव करना चाहते थे. उसके लिए उन्होंने कुछ नया करने की कोशिश की. उन्होंने दीवार पर वार्निश लगाई और फिर उसे टेम्परा पेंट से रंगा. लियोनार्डो ने हमेशा ही प्रयोग किए थे. लेकिन यह प्रयोग था उनकी एक बड़ी गलती साबित हुई.

आज, उस भितिचित्र या वॉल पेंटिंग का अधिकांश भाग उखड़ गया है. कई चेहरे तो सिर्फ आधे ही बचे हैं. रंग फीके पड़ गए हैं. विशेषज्ञों ने "द लास्ट सपर" को पुनर्स्थापित करने के प्रयास किए. उन्होंने उसमें सुधार किए. फिर भी, इस कलाकृति को काफी नुकसान हुआ. यह एक अच्छी बात है कि अब लियोनार्डो अपनी पेंटिंग की हालत देखने के लिए मौजूद नहीं हैं.

ड्यूक कई वर्षों तक लियोनार्डो के अच्छे संरक्षक बने रहे. उन्होंने लियोनार्डो को बहुत व्यस्त रखा. ड्यूक ने लियोनार्डो को मिलान में अन्य अमीर लोगों का काम भी करने दिया.

लियोनार्डो ने मिलान में, एक गरीब, दस वर्षीय लड़के को गोद लिया. वो साल 1490 था. लड़के का नाम जियाकोमो था, लेकिन लियोनार्डो उसे सलाई बुलाते थे. वो एक अशिष्ट शब्द था जिसका अर्थ था "बदमाश" या "राक्षस" था. सलाई वास्तव में एक बदमाश था. वो झूठ बोलता था और चीजें तोड़ता था. उसने लियोनार्डो और उनके के दोस्तों से पैसे चुराए. लियोनार्डो ने अपनी नोटबुक में लिखा कि सलाई दो लड़कों जितना खाता था और उन्हें चार लड़कों जितना परेशान करता था.

फिर भी, लियोनार्डो सलाई के बहुत प्रेम करते थे. लियोनार्डो को उसे तोहफे देकर उसे बिगाड़ने में मजा आता था. सलाई ने चाहे कितना भी बुरा बर्ताव किया लेकिन लियोनार्डो ने उससे कभी घर छोड़ने को नहीं कहा. लियोनार्डो के शेष जीवन भर, सलाई उनके साथ रहा. लियोनार्डो जहां भी गए, सलाई भी उनके साथ गया. उसने शायद लियोनार्डो के लिए छोटे-मोटे काम किए हों, लेकिन वो लियोनार्डो के लिए एक नौकर से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था. लियोनार्डो के बहुत दोस्त नहीं थे. उन्हें अकेले रहना ही अच्छा लगता था. उससे वो खुद सोचने के लिए स्वतंत्र थे. लियोनार्डो का कभी अपना कोई परिवार भी नहीं था. शायद सलाई ही एक ऐसा व्यक्ति था जो उनके लिए परिवार जैसा था.

अध्याय 5

घुमक्कड़ी

1499 में, जब फ्रांसीसियों ने हमला किया, तो ड्यूक ने अपनी सत्ता खो दी और वो मिलान भाग गया. फिर बाद में उसे पकड़ लिया गया. अंत में ड्यूक, फ्रांस में एक कैदी की मौत मरे.

उसी वर्ष दिसंबर में, लियोनार्डो ने मिलान को भी छोड़ दिया. सलाई उनके साथ गया.

लियोनार्डो का एक और पुराना दोस्त भी उनके साथ गया. सोलह साल तक लियोनार्डो के पास अपना कोई असली घर नहीं था. वो एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा के दौरान अपने साथ बहुत कम सामान लेकर जाते थे. केवल सबसे महत्वपूर्ण चीजें ही वो अपने पास रखते थे - जैसे उनकी नोटबुक्स.

मिलान में, उन्होंने चित्रों और विचारों से भरी अपनी नोटबुक्स रखना शुरू कीं. लियोनार्डो तीस साल से अधिक समय तक अपनी नोटबुक्स को भरते रहे. उनकी योजना थी कि वो हर चीज के बारे में एक विशाल विश्वकोश लिखें.
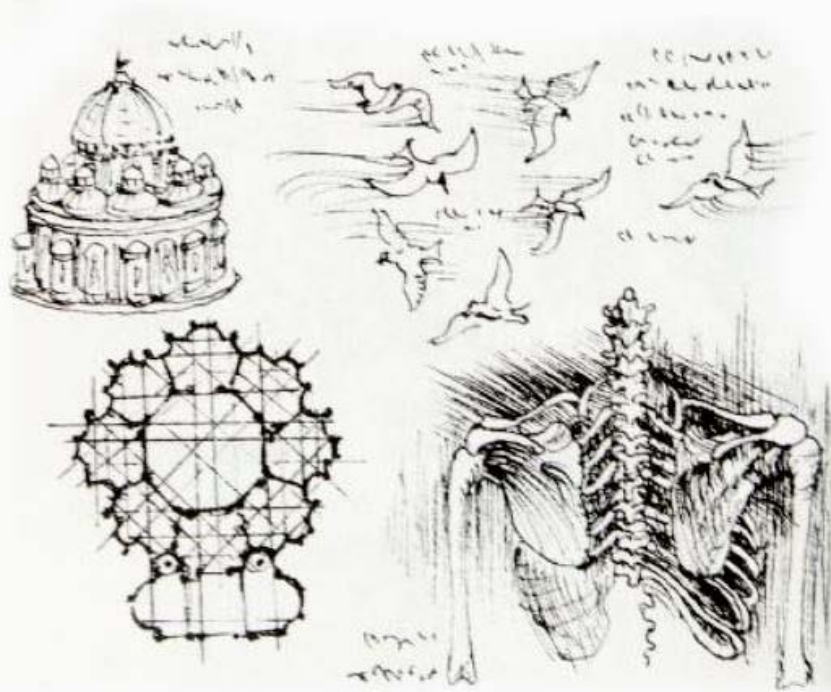
घोड़े की मूर्ति की तरह, यह उनकी एक और बड़ी परियोजना थी. और घोड़े की मूर्ति की तरह, वो भी एक ऐसा काम था जिसे उन्होंने कभी पूरा नहीं किया. हालाँकि, उनकी नोटबुक्स अभी भी एक अनमोल खजाना हैं. नोटबुक्स के पृष्ठों को, लियोनार्डो ने सुंदर चित्रों के साथ चित्रित किया था. वे आज भी दुनिया की सबसे खूबसूरत रेखाचित्रों में से हैं.
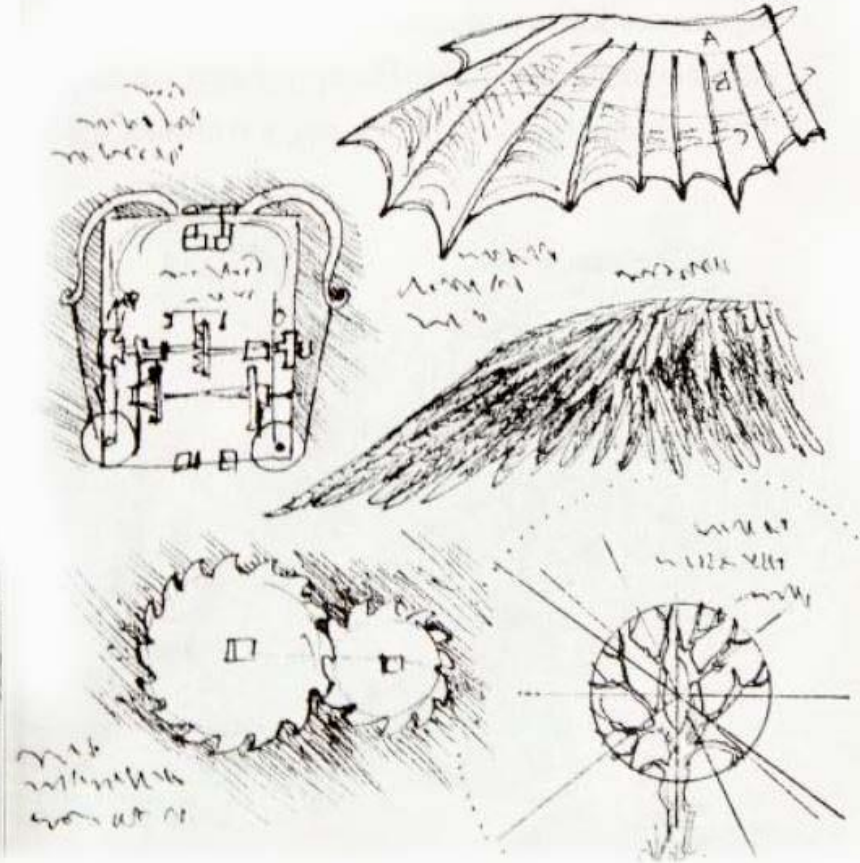
संभवतः उनके लगभग तेरह हजार नोटबुक पृष्ठ थे. लेकिन उनकी मौत के बाद कई पन्ने फाड़कर बेच दिए गए. कुछ कॉपियों को काटकर अलग कर दिया गया; कुछ गायब हो गईं. कुछ को सैकड़ों साल बाद फिर से खोजा गया. आज, लियोनार्डो के नोटबुक्स पेजों के, दस अलग-अलग संग्रह हैं. आज केवल आधे पृष्ठ—लगभग छह हजार पृष्ठ ही अस्तित्व में हैं. वे पृष्ठ पूरी दुनिया में अलग-अलग जगहों पर हैं. इस बात की हमेशा उम्मीद रहती है कि किसी दिन उनकी नोटबुक्स के और पन्ने सामने आएंगे.

माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक बिल गेट्स ने लियोनार्डो के पृष्ठों का एक संग्रह खरीदा. वो सब पानी के बारे में थे. इसे "कोडेक्स एटलांटिकस" कहा जाता है. कभी-कभी उसे संग्रहालयों में प्रदर्शित भी किया जाता है. उनमें लहरों और धाराओं के चित्र हैं, पानी में लहरों के चित्र हैं, पानी की एक बूंद के चित्र हैं जैसे वो एक पोखर में गिरती है. (लियोनार्डो की आंखें इतनी तेज थीं कि आज के उच्च स्पीड कैमरे जो प्रकट कर सकते हैं, वो लियोनार्डो स्वयं देख सकते थे.) उसमें वे प्रयोग हैं जो लियोनार्डो ने पानी के साथ खुद किए थे.
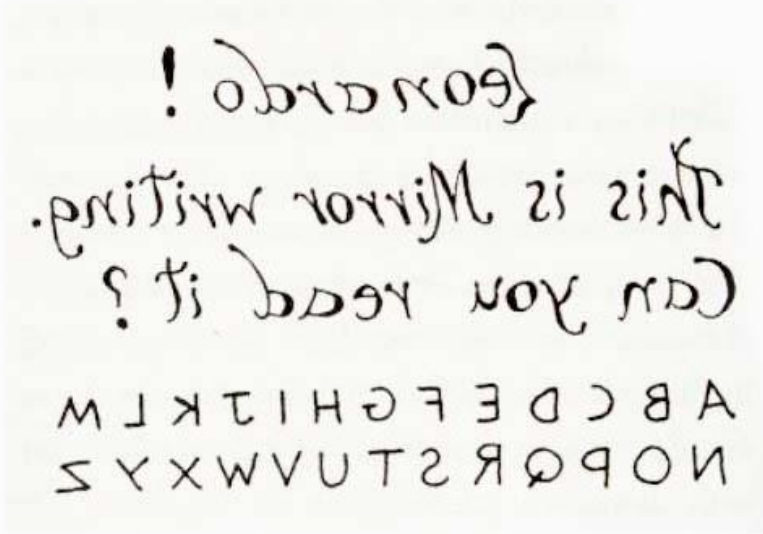
सभी कॉपियों में उनकी लिखावट उलटी है. इसे "मिरर" (दर्पण) लिखाई कहा जाता है. उसे सही ढंग से पढ़ने के लिए पहले एक दर्पण को लिखाई के सामने रखना होता है. लियोनार्डो ने ऐसे क्यों लिखा? किसी को नहीं मालूम. वैसे वो बाएं हाथ से काम करते थे. इसलिए शायद इस तरह से लिखना उनके लिए सबसे आसान था. या हो सकता है कि वो अन्य लोगों के लिए पेजों को पढ़ना कठिन बनाना चाहते हों. शायद उन्हें इस बात की चिंता रही हो कि दूसरे लोग उनके विचारों को चुरा न लें. शायद वो अपने विचारों को गुप्त रखना चाहते हों.

पानी में लियोनार्डो की रुचि उनके बचपन में ही पैदा हुई थी. उन्होंने तूफानों को देखा था. लेकिन पानी केवल उन विषयों में से एक था, जिसे उन्होंने अपने विश्वकोश में शामिल करने की योजना बनाई थी.

वो प्रकाश को समझना और उसकी भी व्याख्या करना चाहते थे —प्रकाश किस चीज का बना था? वो यह समझना चाहते थे कि दृष्टि कैसे काम करती थी, पक्षी क्यों और कैसे उड़ सकते थे, और वो मानव शरीर के विभिन्न अंगों के बारे में भी जानना चाहते थे. उन्होंने बीस बड़े विषयों की एक सूची बनाई थी. किसी नोटबुक के सिर्फ एक पृष्ठ में पक्षियों के पंखों के छोटे-छोटे चित्र हो सकते थे, साथ ही संगीत के बारे में विचार और नए हथियारों के विचार या बांधों के निर्माण पर रेखाचित्र भी हो सकते थे.
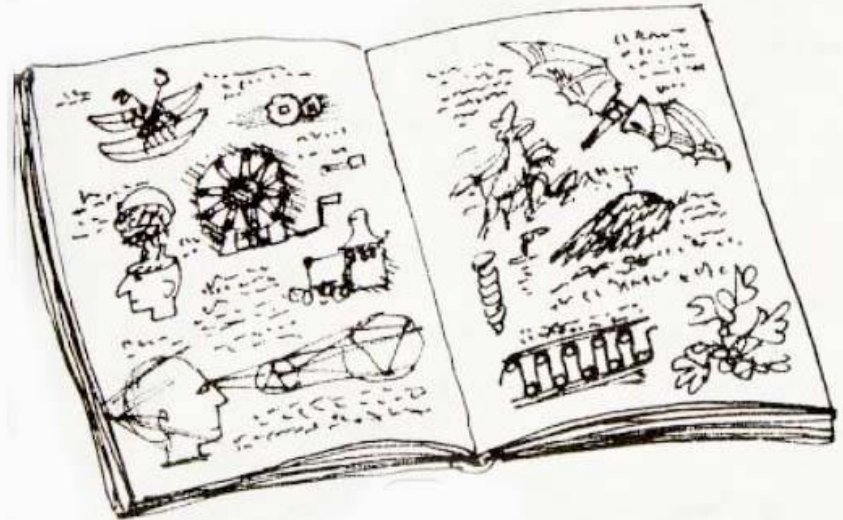
लियोनार्डो कभी एक विषय से बंधे नहीं रहे. वो कई विषयों के बीच आगे-पीछे जाते रहते थे. नोटबुक्स के पन्ने लेखन और सुंदर रेखाचित्रों से भरे हुए हैं. उनमें लगभग वैसा ही है जैसा उनके दिमाग में आया, उन्होंने उसे पृष्ठ पर दर्ज़ किया. नोटबुक्स जो प्रकट करती हैं वो वाकई में एक सच्चे जीनियस का दिमाग है.
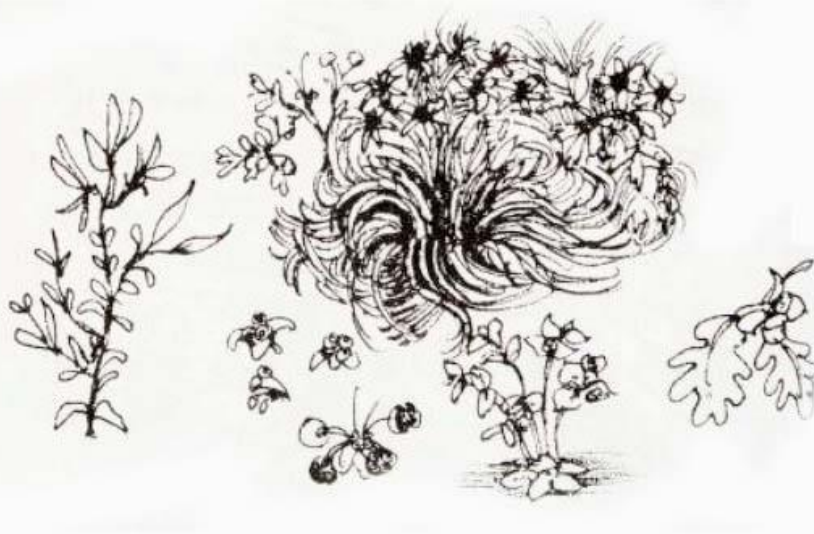
लियोनार्डो को हर तरह की मशीनों में दिलचस्पी थी. मशीन के पुर्जों में भी उनकी रुचि थी.

पेंच, कब्ज़े, जोड़ों, हुक और स्प्रिंग्स, सब में उनकी रूचि थी. दरवाज़े के कब्ज़े की ड्राइंग को ख़ूबसूरत समझना अजीब लग सकता है..
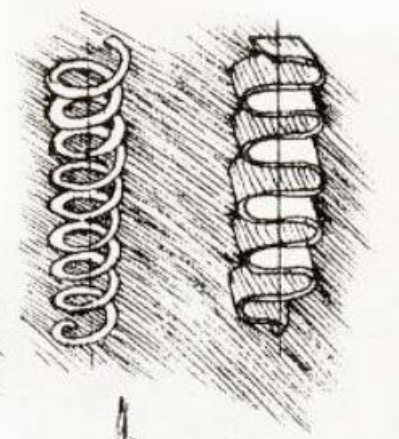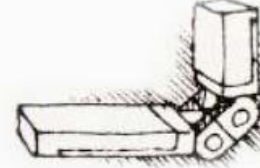
लेकिन जब लियोनार्डो ने उसका एक चित्र बनाया, तो वो ऐसा था ..
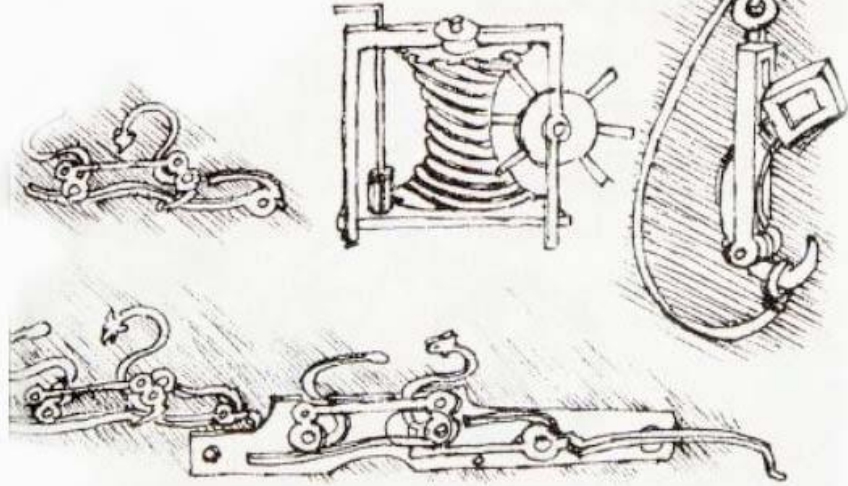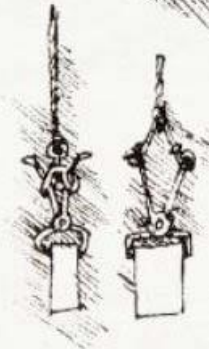
लियोनार्डो लोगों के लिए जमीन, हवा, यहां तक कि पानी के नीचे भी चलने वाले वाहनों का आविष्कार करना चाहते थे.

उन्होंने पैराशूट और पनडुब्बी जैसा भी कुछ डिजाइन किया.

साइकिल के डिज़ाइन में उन्होंने चेन का इस्तेमाल किया था, ठीक वैसे ही जैसे वर्तमान साइकिलों में होता है.
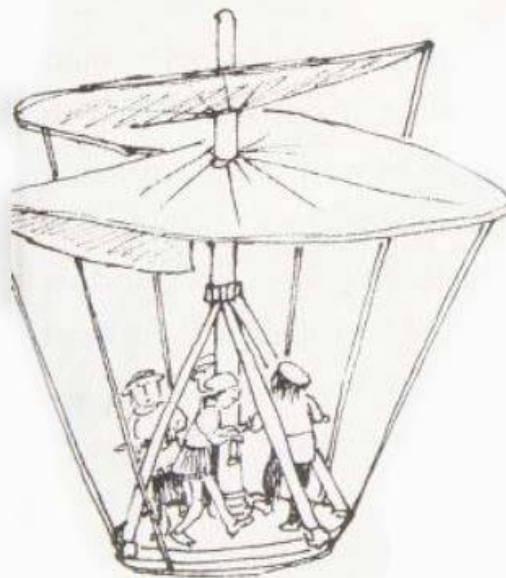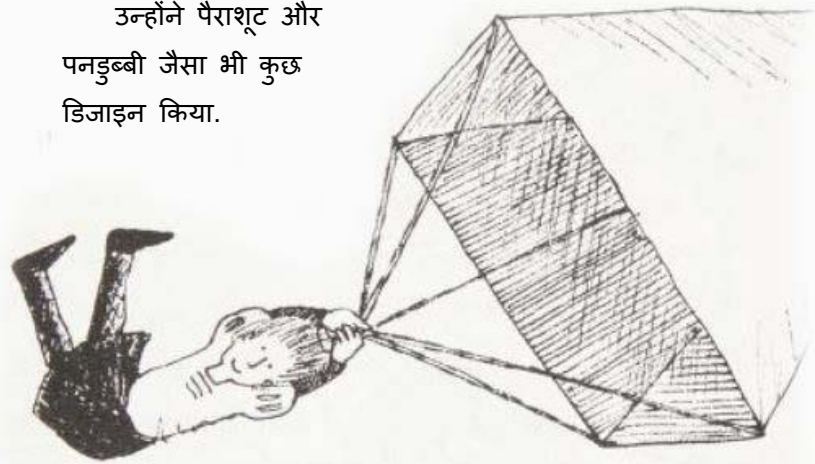
उनकी एक नोटबुक में शीर्ष पर एक रोटर ब्लेड के साथ एक उड़ने वाली मशीन दिखाई देती है. उसका काम चारों ओर घूमना था, बिल्कुल एक हेलिकॉप्टर की तरह.

उन्होंने पक्षियों के पंखों के बहुत सारे चित्र बनाए. और पक्षियों के डैनों पर पंखों के भी. उन्होंने चमगादड़ों का भी अध्ययन किया. और उन्होंने उनके पंखों के चित्र भी बनाए. उन्होंने उन लोगों के लिए पंख बनाने की कोशिश की जो चरखी, क्रैंक, पहिए और शॉक-अवशोषक (अब्सॉरबेर) का उपयोग करते थे. पंखों को हिलाने के लिए एक ड्राइंग में एक जोड़ी बैक पैडल और एक हैंड क्रैंक था. एक अन्य जोड़ी का उपयोग करके, एक इंसान को, अपनी मांसपेशियों की शक्ति का उपयोग करके पंखों को फड़फड़ाना पड़ता था. पंख "हड्डियाँ" लकड़ी के बने थे, चमड़े से "मांसपेशियाँ" और कपड़े से "त्वचा" बनी थी.

लियोनार्डो को यकीन था कि एक दिन लोग ज़रूर उड़ेंगे. उन्होंने कहा, "इस उपकरण को बनाना मनुष्य की शक्ति के भीतर है." एक कहानी के अनुसार लियोनार्डो बाज़ार जाते थे, जहाँ वे पिंजरों में बंद पक्षियों को ख़रीदते थे. फिर वो पक्षियों को घर लाकर उन्हें आज़ाद कर देते थे. पक्षी अपने पंख कैसे फड़फड़ाते हैं? किस चीज ने उन्हें उड़ने में सक्षम बनाया? वे बिना पैर तोड़े सुरक्षित रूप से कैसे उतर पाते हैं? इस प्रकार के उत्तर खोजने के लिए लियोनार्डो तरस जाते थे.
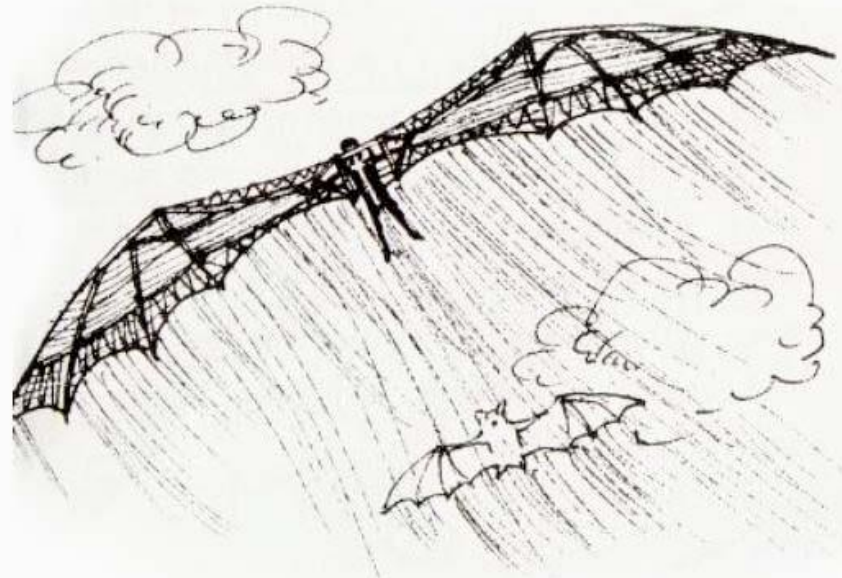
क्या लियोनार्डो ने वास्तव में कोई पंख बनाया? क्या किसी ने उन्हें आजमाया? किसी को इस बात का पता नहीं. नोटबुक्स में, उन्होंने फ्लोरेंस के पास स्थित एक पहाड़ी पर पंखों के परीक्षण का उल्लेख किया है. यदि ऐसा सच में हुआ, तो हो सकता है कि वो पहाड़ी की चोटी से कूद गए हों और थोड़ी देर के लिए हवा में तैरे हों. लेकिन वो उड़ नहीं सकते थे. एक से अधिक कारणों से पंख काम नहीं करते. सबसे पहले, वे बहुत भारी थे. साथ ही किसी भारी वस्तु को जमीन से उठाकर हवा में रखने में भी काफी बल लगता था. उसके लिए मानव शक्ति का बल पर्याप्त नहीं था. और लियोनार्डो के दिनों में, मजबूत शक्ति वाले इंजनों का आविष्कार नहीं हुआ था.

बेशक, लियोनार्डो सही थे. लोगों ने उड़ने वाली मशीनें बनाना सीख लीं. लेकिन 1903 के दिसंबर तक वो संभव नहीं हुआ. तभी राइट बंधुओं के हवाई जहाज ने, बारह सेकंड के लिए पहली उड़ान भरी. लियोनार्डो की मृत्यु के लगभग चार सौ साल बाद मानव उड़ान संभव हुई. वो अपने समय से बहुत आगे की चीजें देखने वाले व्यक्ति थे.
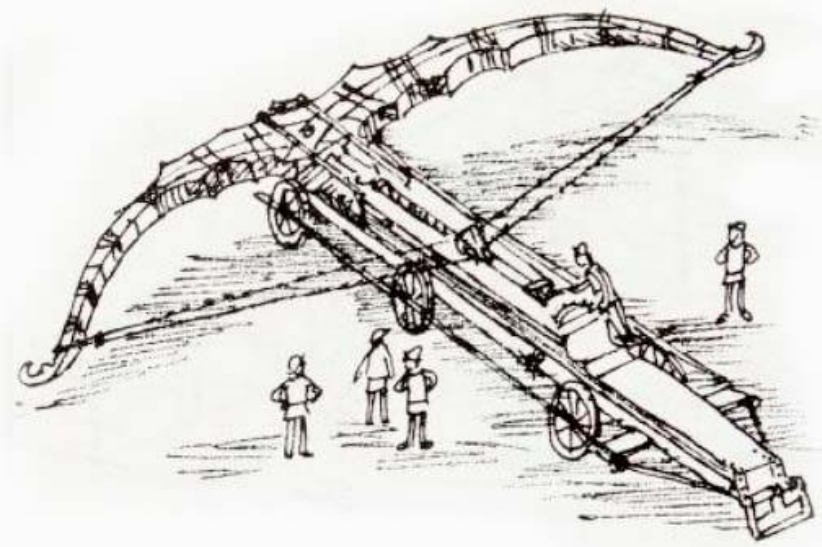
लेकिन उन्हें नई और बेहतर युद्ध की मशीनें डिजाइन करने में मजा आया. कुछ हथियार ऐसे दिखते थे जैसे आप कोई फंतासी फिल्म में देख रहे हों. एक विशाल आकार का क्रॉसबो था. वो एक साथ कई तीर मार सकता था. वो इतना बड़ा था कि कई सैनिकों को उसे मिलकर ऑपरेट करना पड़ता था. उन्होंने एक अजीबोगरीब मशीन भी डिजाइन की, जिसमें से लंबे ब्लेड निकले हुए थे. उसे घोड़े पर बांधना होता था. उससे घुड़सवार दूर स्थित अपने शत्रुओं पर भी हमला कर सकता था.

कुछ समय के लिए, लियोनार्डो ने इटली में एक और ड्यूक के लिए काम किया. उनका नाम सेसारे बोर्गिया था. वो सत्ता के भूखे और खून के प्यासे थे. लियोनार्डो ने युद्ध में उपयोग करने के लिए ड्यूक के सैनिकों के लिए हथियार डिज़ाइन किए. लियोनार्डो युद्ध में विश्वास नहीं करते थे और वो युद्ध को एक बीमारी मानते थे.
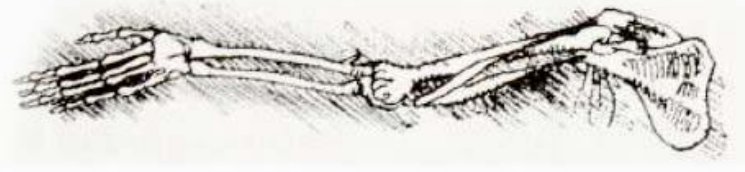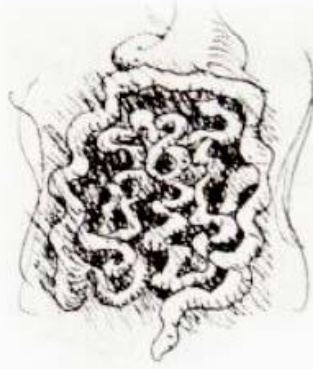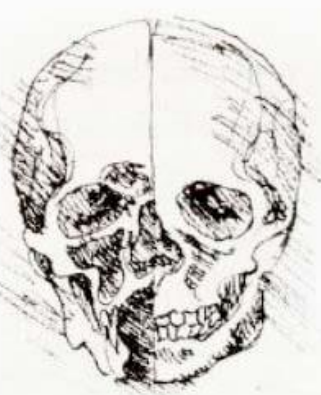
लियोनार्डो ने मानव शरीर की भी, एक मशीन के रूप में कल्पना की. वास्तव में, वो उसे सबसे उत्तम मशीन मानते थे. लियोनार्डो मानव शरीर को उसी तरह समझना चाहते थे जैसे वे घोड़ों को समझते थे - अंदर और बाहर. वो यह पता लगाना चाहते थे कि शरीर के सभी अंग एक-साथ कैसे काम करते थे. यह मालूम करने का सबसे अच्छा तरीका, शवों की चीड़-फाड़ करना था. इसका अर्थ था किसी मृत शरीर को काटना. अलग-अलग परतों को छीलने से पता चलता कि शरीर कैसे बना था.

आज, मेडिकल छात्र विच्छेदन (डिसेक्शन) करके, शरीर के बारे में सीखते हैं. कभी-कभी डॉक्टर यह समझने के लिए भी विच्छेदन करते हैं कि आखिर किसी व्यक्ति की मौत क्यों हुई. लेकिन लियोनार्डो का समय बहुत अलग था. तब मेडिकल छात्रों ने शायद ही कभी विच्छेदन किया हो. विच्छेदन की बजाए वे सिर्फ किताबों से ही सीखते थे. मृत शरीर को काटने का काम बहुत भयानक समझा जाता था.

हालाँकि, लियोनार्डो उसे खुद करने के लिए दृढ़ थे. जब वे मिलान में रहते थे, तब उन्होंने शरीर का विच्छेदन किया. वो डॉक्टर या मेडिकल छात्र नहीं थे, इसलिए वो जो कर रही थे वो असल में अवैध था. बाद में अपने जीवन में वो कई बार फ्लोरेंस लौटे. वहाँ उन्होंने दुबारा और कई विच्छेदन किए. ऐसा माना जाता है कि उन्होंने लगभग तीस मृत शरीरों का विच्छेदन किया. उससे उन्होंने जो कुछ भी सीखा, उसे उन्होंने अपनी नोटबुक्स में दर्ज़ किया. उन्होंने मानव शरीर के जो चित्र बनाए वे सच में आश्चर्यजनक थे.

फ्लोरेंस में, एक अस्पताल में उनकी कार्यशाला थी. उन्होंने वहां रात में काम किया और बिल्कुल अकेले काम किया. वो काम वाकई में घिनौना था. उन्हें उससे नफरत थी. लेकिन फिर भी उन्होंने वो किया.

लियोनार्डो के मरने के काफी समय बाद तक उन चित्रों की खोज नहीं हुई. उनके काम जैसा पहले कभी कुछ नहीं देखा गया था. एक पैर के चित्र को, उन्होंने तीन तरफ से दिखाया था यह समझाने के लिए कि लोग अलग-अलग तरीकों से कैसे चलते थे. लियोनार्डो ने कट-अवे ड्रॉइंग भी कीं. उन्होंने एक ऐसे पैर का चित्र बनाया जहां एक हिस्से में कोई त्वचा नहीं थी. वो अंदर की मांसपेशियों को दिखाने के लिए था.

मांसपेशियां दिखाने के लिए वो उन्हें रस्सियों या डोरी की तरह बनाते थे.
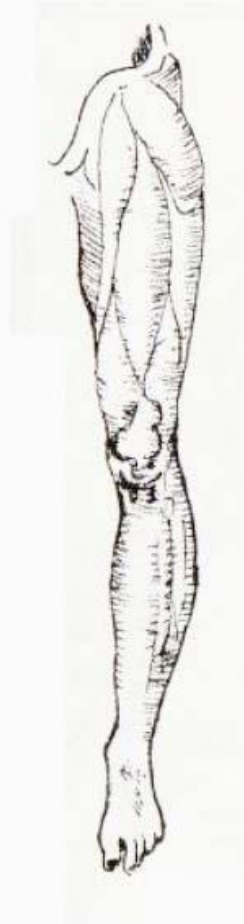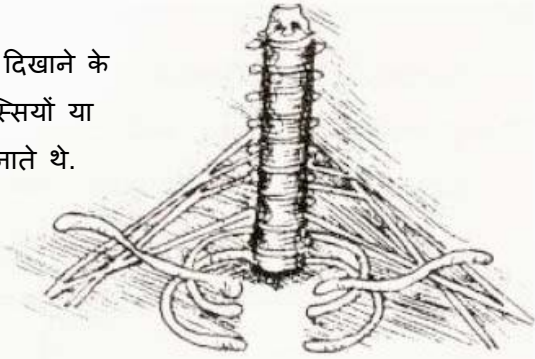
यह दिखाने का वो एक अच्छा तरीका था कि किस तरह से कोई मांसपेशी किसी अंग को खींचती थी. वो हड्डियों को दिखाने के लिए कुछ पेशियों को छोड़ भी देते थे. इन रेखाचित्रों को समझने के लिए शब्दों की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती थी. चित्र, शब्दों से कहीं बेहतर थे. वे चीज़ों को बिल्कुल वैसा दिखाते थे जैसे कि वो असलियत में दिखती थीं.

यदि शरीर एक मशीन थी, तो फिर एक यांत्रिक मनुष्य का निर्माण करना भी संभव था. 1495 में लियोनार्डो ने पहले रोबोट के लिए एक डिज़ाइन बनाया.

इस बात के कुछ सबूत हैं कि उन्होंने उसे बनाया भी. उनका रोबोट, कवच में एक पूर्ण आकार का शूरवीर योद्धा था, जो बैठ सकता था, अपना सिर हिला सकता था और अपनी बाहों को हिला सकता था. एक बार फिर, लियोनार्डो अपने समय से सैकड़ों वर्ष आगे थे.

अध्याय 6

कलाकारों की लड़ाई

लियोनार्डो माइकलएंजेलो राफेल

लियोनार्डो पुनर्जागरण के महानतम कलाकारों में से एक थे लेकिन वे सिर्फ अकेले नहीं थे. इटली में पुनर्जागरण एक ऐसा विशेष काल था क्योंकि उसने बहुत सारे प्रतिभाशाली कलाकारों को जन्म दिया. लियोनार्डो के अलावा, दो अन्य सबसे बड़े कलाकार राफेल और माइकलएंजेलो थे.

राफेल

राफेल सैंजियो का जन्म 6 अप्रैल, 1483 को उरबिनो, इटली में हुआ था. उन्होंने सबसे पहले अपने कलाकार पिता से चित्र बनाना सीखा. जब वो इक्कीस वर्ष के थे तब वो फ्लोरेंस गए, जहां उन्होंने लियोनार्डो और माइकलएंजेलो के कार्यों का अध्ययन किया. अपने समय में, राफेल सबसे लोकप्रिय चित्रकार थे. मैरी और शिशु यीशु की उनकी प्यारी तस्वीरों में एक विशेष मिठास और सद्भाव है. उनके रंग मजबूत और शुद्ध होते थे, ओर वो कभी किसी को झकझोरते नहीं थे. राफेल की पेंटिंग में हर चीज ठीक वहीं दिखती है, जहां उसे होना चाहिए था. बाद में अपने करियर में, उन्होंने माइकलएंजेलो जैसे ही पोप के लिए रोम में काम किया. राफेल ने दो विशाल भित्ति चित्र बनाए. एक को "एथेंस का स्कूल" कहा जाता है, जिसमें उन्होंने प्राचीन यूनान के महान विचारकों को चित्रित किया था. प्लेटो और अरस्तू केंद्र में खड़े थे. अफसोस की बात है कि राफेल सिर्फ सैंतीस साल की उम्र में ही मर गए.

माइकलएंजेलो

माइकलएंजेलो का पूरा नाम माइकलएंजेलो बुओनारोटी था. उनका जन्म 1475 में कैप्रेस, इटली में हुआ था. उनका लंबा और सफल करियर रहा, लेकिन उन्होंने पेंटिंग को अपना असली काम नहीं माना. वो खुद को एक अव्वल मूर्तिकार मानते थे. उन्हें खूबसूरत इटालियन मार्बल में काम करना अच्छा लगता था. फ्लोरेंस में उनकी प्रसिद्ध मूर्तियों के अलावा, उनके महान कार्यों में से एक यीशु के शरीर को धारण करने वाली मैरी की मूर्ति है. उसे "पिएटा" कहा जाता है और जब वो मूर्ति पूरी हुई तब वो केवल तेईस वर्ष के थे. "पिएटा" एक उदास कोमलता से भरी है, लेकिन माइकलएंजेलो को मुख्य रूप से मजबूत, मांसल मूर्तियाँ बनाने के लिए जाना जाता है.

एक मूर्तिकार की हैसियत से वो रोम में पोप के लिए एक चर्च की पूरी छत को पेंट करने के लिए सबसे प्रसिद्ध हैं - सिस्टिन चैपल की छत. साठ फीट हवा में मचान पर काम करते हुए उन्हें उस काम को पूरा करने में, चार साल लगे. वो फ्रेस्को में, दुनिया के निर्माण की कहानियां दर्शाई गई हैं.

राफेल, लियोनार्डो के बहुत बड़े प्रशंसक थे. लेकिन माइकलएंजेलो वैसे नहीं थे. वो लियोनार्डो को पसंद नहीं करते थे और लियोनार्डो उन्हें पसंद नहीं करते थे. ऐसे दो पुरुषों की कल्पना करना कठिन है जो अधिक भिन्न हों. माइकलएंजेलो एक अमीर परिवार से आते थे लेकिन वो अक्सर अपने कपड़े नहीं धोते थे और न ही बदलते थे. वो अपने स्टूडियो के फर्श पर ही सोते थे. उनका कद छोटा था और पीठ टेढ़ी थी और स्वभाव तेज था. दूसरी ओर लियोनार्डो सुंदर, बड़े करीने से तैयार होते थे और देखने में आकर्षक थे.

लियोनार्डो से सत्ताईस साल छोटे, माइकलएंजेलो "डेविड" की विशाल मूर्ति बनाने के लिए प्रसिद्ध हुए. लियोनार्डो को वो प्रतिमा इतनी महान नहीं लगती थी. कम-से-कम वो यही कहते थे.

बदले में, माइकलएंजेलो ने लियोनार्डो का, उनकी विशाल प्रतिमा को कभी पूरा न करने के लिए सार्वजनिक रूप से उनका मज़ाक उड़ाया. उन्होंने कहा, "तुमने एक घोड़े का मॉडल बनाया जिसे तुम कभी पीतल में ढाल नहीं सके और उसे तुमने शर्म के मारे छोड़ दिया. और फिर भी मिलान के मूर्ख लोगों ने तुम पर विश्वास किया!"

जब दोनों से फ्लोरेंस के मुख्य सरकारी भवन की एक दीवारों पेंट करने को कहा गया तो वो दोनों में एक कड़ा मुकाबला बन गया. दीवारों को, फ्लोरेंस द्वारा जीती गई प्रसिद्ध लड़ाइयों के विभिन्न दृश्यों को चित्रित करना था.

फिर से, वहां पर भित्ति चित्र बनाने थे, यानी चित्रों को सीधे दीवारों पर चित्रित किया जाना था. (पिछली बार लियोनार्डो ने यह कोशिश "द लास्ट सपर" के लिए मठ में की थी.)

कमरा बड़े विशाल आकार का था, और लियोनार्डो का फ्रेस्को लगभग साठ फीट लम्बा और चौबीस फीट चौड़ा था. उन्होंने कई चित्र बनाकर शुरुआत की. वो एक एक्शन से भरपूर दृश्य चाहते थे, जिसमें हिनहिनाते घोड़े और सैनिकों की लड़ाई हो और युद्ध की भयावहता भी सामने आए: मृतक, घायल दर्द से कराह रहे योद्धा, धूल , गंदगी और खून.

लियोनार्डो ने डिजाइन पर निर्णय लेने के बाद, एक कार्टून बनाया, जिसे दीवार पर स्थानांतरित कर दिया गया. फिर उन्होंने एक चबूतरे के साथ एक मचान बनाया जो हिल सकता था, जिससे वो आराम से अपना काम कर सकें.

परेशानी यह थी कि लियोनार्डो अभी भी सामान्य तरीके से वो फ्रेस्को नहीं बनाना चाहते थे. एक बार फिर उन्होंने एक प्रयोग किया. उन्होंने पेंट को जल्दी सुखाने के लिए कोयले की आग के साथ ऑइल-पेंट का उपयोग करने का एक तरीका खोजा.
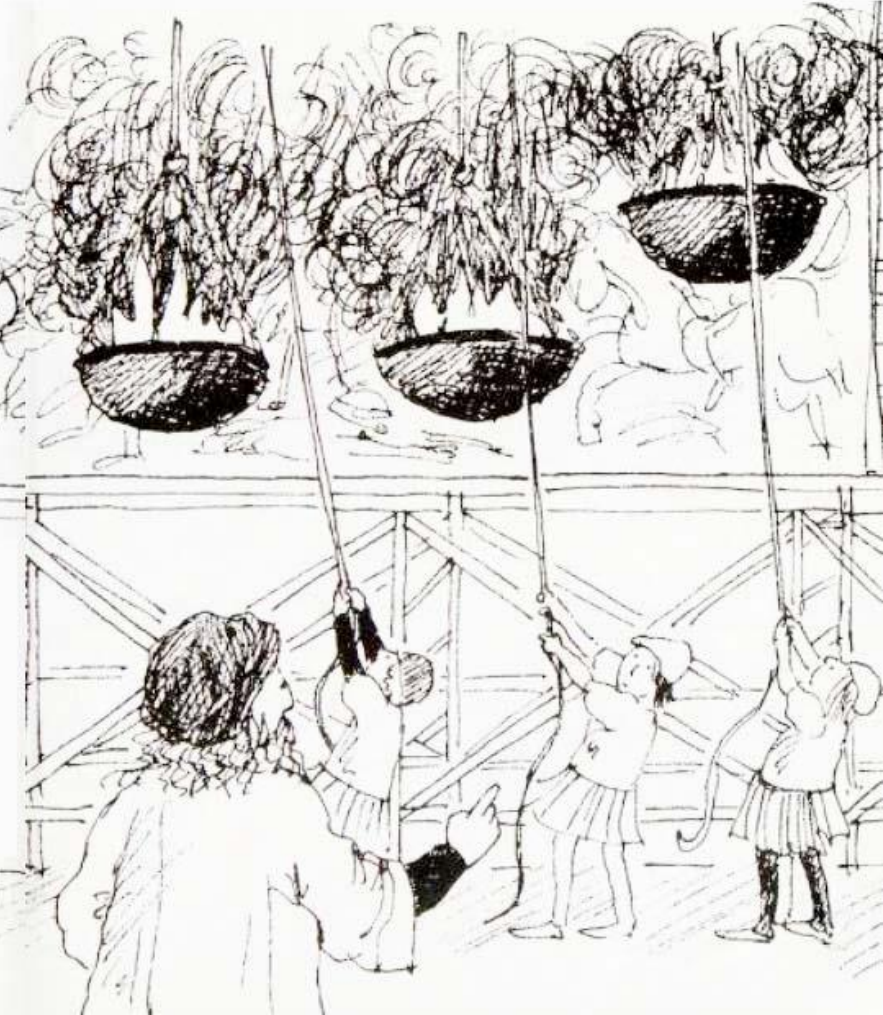
उन्होंने अपने स्टूडियो में एक दीवार पर प्रयोग का परीक्षण किया था और उसने काम भी किया था. लेकिन परीक्षण एक छोटे से पेंट से ढके क्षेत्र पर किया गया था. लियोनार्डो की उस तकनीक को, एक बड़े क्षेत्र में काम करने की आवश्यकता थी - पर वैसा नहीं हुआ. अगर आग को पेंटिंग के करीब रखा जाता, तो पेंटिंग पिघल जाती थी. यदि आग को बहुत दूर रखा जाता, तो पेंटिंग को सुखाने के लिए पर्याप्त गर्मी नहीं मिलती थी. उनके युद्ध के दृश्य का शीर्ष भाग धुएँ से काला हो गया; अन्य हिस्से भी खराब हो गए. तीन साल की कड़ी मेहनत के बाद लियोनार्डो को एक बड़ी असफलता के अलावा और कुछ नहीं मिला.

जहाँ तक माइकलएंजेलो की बात है उसने भी अपनी दीवार खत्म नहीं की. शायद लियोनार्डो को उससे कुछ सुकून मिला हो. 1504 में, माइकलएंजेलो को पोप द्वारा कुछ अन्य कार्य करने के लिए रोम बुलाया गया. उन्हें पोप के गिरजाघर की छत को रंगना था. हम उसे सिस्टिन चैपल के नाम से जानते हैं.

1500 के कार्टूनिस्ट

आधुनिक कार्टून, जो समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में विनोदी कॉमिक स्ट्रिप्स के रूप में बनाए जाते हैं, पुनर्जागरण कार्टून के समान नहीं होते हैं. तब कार्टून एक चित्र होता था, और किसी फ्रेस्को के बनाने में एक चरण होता था. कलाकार हर चीज़ को उसके आकार के हिसाब से खींचते थे, ठीक वैसे ही जैसे वो दीवार पर दिखाई देगी. कार्टून को दीवार पर लगाया जाता था फिर ड्रॉइंग की पूरी बाहरी रेखा में छोटे-छोटे छेद बनाए जाते थे.

उसके बाद, कलाकार चारकोल से लाइनों को बनाते थे. जब कार्टून को दीवार से हटाया जाता था, तो सिर्फ चारकोल की एक रूपरेखा बचती थी. फिर कलाकार पूरी तरह रंगीन पेंटिंग शुरू करने के लिए तैयार होता था. लियोनार्डो के कार्टून जो अभी भी मौजूद हैं, स्वयं कला के सुंदर कार्य हैं. युद्ध के दृश्य के लिए कार्टून फ्लोरेंस शहर द्वारा रखा गया था. अधिकारियों ने महसूस किया कि लियोनार्डो द्वारा दीवार खराब किये जाने के बाद वो कार्टून अब उनकी संपत्ति बन गया था. आज वो एक संग्रहालय में रखा है.
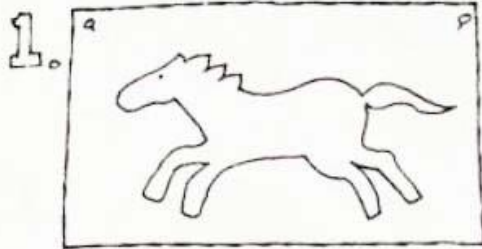
ड्राइंग को दीवार पर चिपकाया जाता है
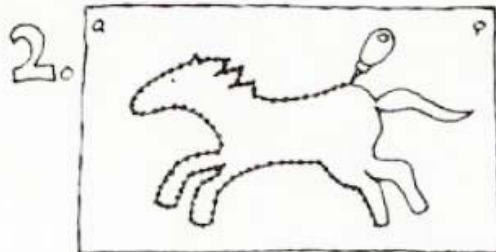
रेखा पर छेद किए जाते हैं

चारकोल को रेखाओं के ऊपर रगड़ा जाता था

चारकोल को रेखाओं को छोड़कर कार्टून को निकाल दिया जाता था

अध्याय 7

लियोनार्डो की देवियां

लियोनार्डो के करियर में सब कुछ असफलता में समाप्त नहीं हुआ. कभी-कभी वो सच में कोई काम पूरा कर डालते थे. यह सच है कि लियोनार्डो ने केवल दस पूर्ण चित्रों को ही बनाया. वो एक बहुत छोटी संख्या है. लेकिन उनका हर चित्र एक गज़ब का खजाना है.

एक कहानी के अनुसार 1505 में एक अमीर रेशम का व्यापारी अपनी पत्नी की तस्वीर बनवाना चाहता था. उसने लियोनार्डो उसे पेंट करने के लिए आमंत्रित किया. लियोनार्डो ने दोस्तों से कहा था कि वो "तूलिका से थक चुके थे." उनका मतलब था कि पेंटिंग अब उन्हें ज़्यादा आनंद नहीं देती थीं. लेकिन शायद उन्हें पैसों की जरूरत थी, या शायद महिला का चेहरा उन्हें बहुत दिलचस्प लगा, खासकर महिला की मुस्कान. जो भी कारण हो, लियोनार्डो ने वो काम हाथ में ले लिया. और उन्होंने उस पेंटिंग को पूरा भी किया, हालांकि उन्होंने उस पर कई सालों तक काम किया.

महिला का नाम क्या था यह कोई नहीं जानता है. उनका पहला नाम लिसा हो सकता है. वो लिसा डेल जिओकोंडो हो सकती हैं. अंग्रेजी में इस पेंटिंग को मोना लिसा कहते हैं.

पोर्ट्रेट में मोना लिसा के शरीर का केवल ऊपरी आधा हिस्सा दिखाया गया है. उसके पीछे एक परिदृश्य है. एक घुमावदार सड़क वापस टेढ़े-मेढ़े पहाड़ों की ओर ले जाती है जो धुंध में गायब हो जाती है.

मोना लिसा की काली ड्रेस बेहद साधारण है. और उन्होंने कोई फैंसी आभूषण नहीं पहना है. एक पतले काले घूंघट ने उनके लंबे घुंघराले बालों को ढँक रखा है. तब, अब की तरह ही, विधवाओं के लिए काले कपड़े पहनने की प्रथा थी. तो फिर शायद मोना लिसा किसी रेशम के व्यापारी की पत्नी नहीं थीं. शायद वो कोई और थीं जिसके बारे में हम कुछ नहीं जानते. यह पेंटिंग के रहस्यों में से एक है.

उनके दोनों हाथ, एक-दूसरे पर आराम कर रहे हैं. हाथ कोमल, लंबी उंगलियों के साथ बहुत सुंदर हैं. उन्हें देखकर यह विश्वास करना आसान हो जाता है कि त्वचा के नीचे मांसपेशियां और हड्डियां भी होंगी. उसे देखकर लोग यह भूल जाते हैं कि वे हाथ, सपाट सतह पर एक पेंट के ब्रशस्ट्रोक हैं.

लेकिन उस महिला के चेहरे का भाव ही, लोगों को उनकी ओर खींचता है. उनके होंठ, एक शांत अर्ध-मुस्कुराहट में दबे हुए हैं.

ऐसा लगता है जैसे वो कोई राज़ छिपाए हों. उनकी आंखें भी रहस्य से भरी हैं. ऐसा प्रतीत होता है कि वो किसी ऐसी चीज को देख रही हैं जिसे केवल वो ही देख सकती हैं.

लूव्र म्यूज़ीअम, पेरिस
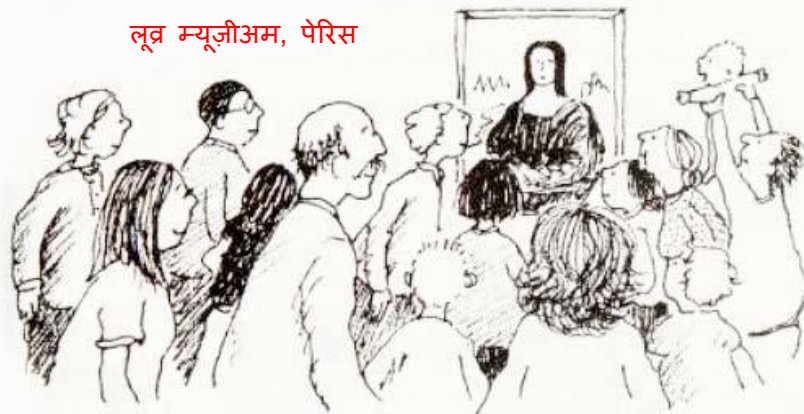
मोना लिसा शायद दुनिया की सबसे प्रसिद्ध पेंटिंग है. क्यों? वास्तव में कोई भी उस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता है. लेकिन लियोनार्डो को भी वो पेंटिंग बहुत पसंद थी. जब वो ख़त्म हुई, तो लियोनार्डो ने उसे खुद रखने का फैसला किया. वास्तव में, उन्होंने उसे हमेशा अपने साथ रखा, जहाँ भी वो गए, वो उस पेंटिंग को अपने साथ लेकर गए.

कई लोग लियोनार्डो की एक और महिला की पेंटिंग को मोना लिसा से भी ज्यादा खूबसूरत मानते हैं. इसे "यंग गर्ल विद एर्मिन" कहा जाता है. एर्मिन एक प्रकार का नेवला होता है. सर्दियों में, उसका कोट सफेद हो जाता है - जैसा कि पेंटिंग में दिखाई देता है. पेंटब्रश के लिए एर्मिन के बालों का इस्तेमाल किया जाता था. तो, यह संभव है कि लियोनार्डो ने एर्मिन को एर्मिन के ब्रश से पेंट किया हो!

पेंटिंग में एक एर्मिन क्यों है? यह शब्दों पर कुछ खेल हो सकता है. लड़की का नाम सीसिलिया गैलरानी था, और ग्रीक में गेल का अर्थ "एर्मिन" होता है.

मोना लिसा में, युवा लड़की का केवल शीर्ष आधा भाग चित्रित किया गया था. लेकिन उसके पीछे कोई परिदृश्य नहीं था. वो एक गहरे रंग की ठोस पृष्ठभूमि के खिलाफ खड़ी थी. न तो लड़की और न ही जानवर सीधे दर्शक को देखते हैं. उसकी बजाय, उसका चेहरा इस तरह से मुड़ा हुआ है कि वो किनारे की ओर देख रही है. वो क्यों या किसको देख रही है? कोई नहीं जानता. वह मोना लिसा की तुलना में अधिक अमीर कपड़े पहने है. उसके गले में मोतियों की एक लंबी माला है. उसकी पोशाक का कुछ भाग नीले, कुछ लाल, सोने की परत और काली ट्रिम से बनी है. लगता है कपड़ा मखमल से बना हो.

मोना लिसा देखने में स्वप्निल है. लेकिन यहां की युवती ऐसी दिखती है जैसे उसका तेज दिमाग हो. आप इसे उसकी सतर्क आँखों, उसके मुँह और ठुड्डी में देख सकते हैं. एक हाथ से उसने करीबी से एर्मिन को पकड़ा है.

एर्मिन, सतर्क और बुद्धिमान भी दिखती है. लड़की का हाथ सुन्दर है. उसे पूर्णता के लिए चित्रित किया गया है. लेकिन उसकी पतली उंगलियाँ तनावग्रस्त हैं. मोना लिसा की उँगलियाँ मोटी और तनावमुक्त हैं. पोज़ और चेहरों के माध्यम से, लियोनार्डो ने दो अलग-अलग महिलाओं की आत्मा को कैद किया है.

"यंग गर्ल विद एर्मिन" "मोना लिसा" जितनी प्रसिद्ध नहीं है. वो क्राको, पोलैंड के एक संग्रहालय में लटकी हुई है. लेकिन मोना लिसा पेरिस के एक प्रसिद्ध संग्रहालय लूव्र में है जहाँ उसे देखने के लिए हर दिन एक भीड़ उमड़ती है. कौन सी पेंटिंग ज्यादा खूबसूरत है? जिन भाग्यशाली लोगों ने वे दोनों देखी हैं, वो अपने लिए मामला खुद तय कर सकते हैं.

लियोनार्डो द्वारा बनाया युवा महिला का एक और चित्र वाशिंगटन, डीसी में नेशनल गैलरी ऑफ़ आर्ट में है. यह अमेरिका में लियोनार्डो द्वारा बनाई गई एकमात्र पेंटिंग है. उसका नाम "गाइनवरा डी बेन्सी" है. वो "मोना लिसा" और "यंग गर्ल विद एर्मिन" से भी छोटी है. किसी बिंदु पर नीचे का हिस्सा काट दिया गया था, इसलिए अब पेंटिंग में केवल गाइनवरा का सिर और छाती ही दिखाई देती है. उसकी त्वचा लगभग भूतिया पीली है.

गाइनवरा डी बेन्सी.

उसकी आँखें उदास लगती हैं. उसकी अभिव्यक्ति को "पढ़ना" बहुत कठिन है. यही एक कारण है कि लोग उस पेंटिंग को बस निहारते ही रहते हैं. गाइनवरा डी बेन्सी के पोर्ट्रेट को देखकर एक डर का एहसास होता है.

अध्याय 8

हानि

1504 में, लियोनार्डो के पिता, सेर पिएरो की मृत्यु हो गई. वो अठहत्तर साल के थे. पिता अपना कोई वसीयतनामा नहीं छोड़ गए इसलिए अंत में लियोनार्डो को कुछ भी नहीं मिला. सारा पैसा सेर पिएरो के अन्य बच्चों के पास चला गया.

फिर, 1507 में, लियोनार्डो के चाचा फ्रांसेस्को की मृत्यु हो गई. लियोनार्डो को स्नेह देने वाले वो एकमात्र रिश्तेदार थे. फ्रांसेस्को की इच्छा थी और वो अपना सब कुछ लियोनार्डो के लिए छोड़ गए. फ्रांसेस्को चाहते थे कि लियोनार्डो को उनकी सारी जमीन और पैसा मिले. लेकिन उससे लियोनार्डो के सौतेले भाई-बहन बहुत गुस्सा हुए. वे कोर्ट में गए. लियोनार्डो को अंत में जो मिला वो फ्रांसेस्को की भूमि और धन का सिर्फ उपयोग था. लियोनार्डो के मरने के बाद वो वापिस चाचा के रिश्तेदारों के पास चला गया.

लियोनार्डो लगभग साठ साल के थे. उन्हें स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतें थीं. उनका अपना कोई घर नहीं था और उनके पास अपने वर्षों का कार्य दिखाने के लिए बहुत कुछ नहीं था.

लेकिन ऐसे समय में जब उन्हें एक संरक्षक की बेहद आवश्यकता थी, तब उन्हें एक संरक्षक मिला. उन्होंने लियोनार्डो की प्रतिभा की सराहना की. उन्होंने लियोनार्डो को एक सुंदर घर और बगीचा दिया. उन्होंने लियोनार्डो के साथ उनके दत्तक पुत्र सलाई और उनके दूसरे अच्छे दोस्त, फ्रांसेस्को मेल्ज़ी को भी रहने दिया. लियोनार्डो सिर्फ उन लोगों का साथ रहना चाहते थे.

लियोनार्डो के संरक्षक एक राजा थे.

फ्रांस के राजा फ्रांसिस प्रथम का, अंबोइस में एक भव्य घर था. वो फ्रांस के उत्तरी भाग में था. उन्होंने लियोनार्डो को रहने के लिए एक सुंदर ईंट-और-चूना पत्थर का घर दिया. लियोनार्डो वहां पर अपना पुस्तक संग्रह, अपनी नोटबुक्स और अपनी तीन पेंटिंग्स साथ लाए. उनमें से एक मोना लिसा भी थी.

एक सुरंग दोनों घरों को आपस में जोड़ती थी. जब भी वो अंबोइस में होते, तो हर दिन राजा, लियोनार्डो से मिलने और बात करने आते थे. वो कोई एक विषय चुनते थे और उस पर लियोनार्डो की राय जानना चाहते थे. राजा ने यह महसूस किया कि लियोनार्डो की उपस्थिति में होना, निश्चित रूप से एक सम्मान की बात थी.

और इसलिए, अपनी मृत्यु तक लियोनार्डो फ्रांस में ही रहे. 2 मई, 1519 को उनकी मृत्यु हो गई. एक कहानी के अनुसार मरते समय लियोनार्डो का सिर राजा की गोद में रखा था. कुछ लोगों के अनुसार उनके अंतिम शब्द उनके घोड़े की मूर्ति के बारे में थे. काश वो उसे पूरा कर पाते.

लियोनार्डो को अंबोइस में एक चैपल में दफनाया गया. हो सकता है कि वो एक सुखद अंत न हो. लेकिन वो दुख की बात भी नहीं है.

नोटबुक्स

लियोनार्डो ने अपनी नोटबुक्स अपने दोस्त मेल्ज़ी के पास छोड़ दीं, जिसने उन्हें व्यवस्थित करने की कोशिश की. कला के सभी पृष्ठ संकलित करके एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किए गए. इसे पेंटिंग पर एक "ट्रीटीस" कहा जाता था. कोई "ट्रीटीस" एक विषय पर एक व्यक्ति के विचारों की व्याख्या होती है. इसलिए, वो पुस्तक पेंटिंग के बारे में लियोनार्डो के विचारों की व्याख्या है. किसी कारण से, पुस्तक लियोनार्डो की मृत्यु के 130 से अधिक वर्षों के बाद 1651 में ही प्रकाशित हुई. नोटबुक्स के शेष पृष्ठ लंबे समय तक दुनिया के लिए अनजान बने रहे. वे पन्ने खो गए या चोरी या काटे गए. कुछ 1800 के दशक की शुरुआत में ही प्रकाश में आए. कुछ हाल में 1965 में मिले. वे मैड्रिड में राष्ट्रीय पुस्तकालय के एक ढेर में मिले!

Leonardo

लियोनार्डो दा विंची के जीवन की समयरेखा

1452 लियोनार्डो का जन्म 15 अप्रैल को हुआ

1468 लियोनार्डो, फ्लोरेंस में वेरोकियो के स्टूडियो में एक प्रशिक्षु (जमूरे) बने

1473 लियोनार्डो पेंटर्स गिल्ड के सदस्य बने

1476 लियोनार्डो की पेंटिंग “अननसीएशन” “Annunciation"

1478 लियोनार्डो की पेंटिंग “गेनवरा डी बेन्सी”

1482 लियोनार्डो ने मिलान में काम करने के लिए फ्लोरेंस छोड़ा; उस समय के आसपास, उन्होंने नोटबुक्स रखना शुरू कर दिया

1490 लियोनार्डो ने घोड़े की मूर्ति पर काम किया

1490 ड्यूक के भतीजे की शादी की दावत के लिए स्वर्ग का पर्व मनाया गया; सलाई, लियोनार्डो के साथ रहने आया

1493 लियोनार्डो की पेंटिंग "यंग गर्ल विद एर्मिन"

1495 लियोनार्डो ने एक उड़ने वाली मशीन का परीक्षण किया

1498 लगभग जब लियोनार्डो ने मिलान के "द लास्ट सपर" के लिए फ्रेस्को पूरा किया

1499 फ्रांसीसी सेना ने मिलान पर हमला किया और घोड़े की मूर्ति के मॉडल को नष्ट कर दिया

1499 -1500 लियोनार्डो ने मिलान छोड़ा

1502 लियोनार्डो ने सेसारे बोर्गिया के लिए काम किया

1503 लियोनार्डो, फ्लोरेंस में वापस आए; तभी लियोनार्डो ने मोना लिसा को चित्रित करना शुरू किया

1506 लियोनार्डो ने फ्लोरेंस के टाउन हॉल में युद्ध के दृश्य फ्रेस्को को अधूरा छोड़ दिया

1506 लियोनार्डो मिलान लौटे

1516 लियोनार्डो, फ्रांस के राजा के अतिथि के रूप में अंबोइस चले गए

1519 लियोनार्डो की मृत्यु 2 मई को हुई

दुनिया की समयरेखा

1450 जोहान्स गुटेनबर्ग ने मूवेबल टाइप प्रिंटिंग प्रेस तैयार किया

1473 पोलैंड के खगोलशास्त्री निकोलस कोपरनिकस का जन्म हुआ

1475 माइकलएंजेलो बुओनरोती का जन्म हुआ

1488 पुर्तगाल के बार्थोलोम्यू डायस ने अफ्रीका के दक्षिणी सिरे का चक्कर लगाया

1492 क्रिस्टोफर कोलंबस ने नई दुनिया की यात्रा की

1494 सुलेमान प्रथम, बाद में तुर्क साम्राज्य के सम्राट का जन्म हुआ

1497-99 वास्को डी गामा ने भारत के लिए समुद्री मार्ग की खोज की

1504 माइकलएंजेलो की "डेविड" की मूर्ति: युवा राफेल, लियोनार्डो और माइकलएंजेलो के साथ अध्ययन करने के लिए फ्लोरेंस आया

1506 रोम में पीटर के चर्च के पुनर्निर्माण के लिए वास्तुकार डोनाटो ब्रैमांटे को पोप द्वारा नियुक्त किया गया

1507 लियोनार्डो के मित्र, खोजकर्ता अमेरिगो वेस्पूसी नई दुनिया में नौकायन के अपने वर्णन को प्रकाशित किया; नई दुनिया का नाम अमेरिका वेस्पुसी के नाम पर रखा गया

1512 माइकलएंजेलो ने सिस्टिन चैपल की पेंटिंग पूरी की; दुनिया का पहला नक्शा बनाने वाले गेरार्डस मर्केटर का जन्म हुआ

1514 एंड्रियास वेसालियस - मानव शरीर रचना पर पहली सटीक पुस्तक प्रकाशित करने वाले, ब्रसेल्स में पैदा हुए

1519 फर्डिनेंड मैगेलन ने दुनिया भर में पहली यात्रा शुरू की

1533 महारानी एलिजाबेथ प्रथम का जन्म